तमसो मा ज्योतिर्गमय

शिक्षा सारथी

विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा की मासिक पत्रिका

वर्ष- 13, अंक - 10, सितंबर 2025 , मूल्य-15 रु

schooleducationharyana.gov.in | shikshasaarthi@gmail.com

सोनीपत की सुनीता दुल को राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार

हम शिक्षक हैं

हम शिक्षक हैं,
सबको हम शिक्षा देते हैं।

जग से अँधेरा दूर करें हम,
ज्ञान-प्रकाश फैलाते हैं।
हम शिक्षक हैं,
सबको हम शिक्षा...

नहीं किसी से भेद करें हम,
सबको समान समझते हैं।
हम शिक्षक हैं,
सबको हम शिक्षा...

नहीं किसी का बुरा करें हम,
सबका भला ही चाहते हैं।
हम शिक्षक हैं,
सबको हम शिक्षा...

जो शिक्षक के पदचिह्नों पर चलते,
वो जग में रोशन होते हैं।
हम शिक्षक हैं,
सबको हम शिक्षा...

जिन्हें आशीर्वाद मिले शिक्षक का,
वो आसमान को छूते हैं।
हम शिक्षक हैं,
सबको हम शिक्षा...

चाह नहीं कुछ ज़्यादा हमको,
केवल मान चाहते हैं।
हम शिक्षक हैं,
सबको हम शिक्षा देते हैं।

कविता
प्राथमिक अध्यापिका
राजकीय प्राथमिक विद्यालय
सराय अलावर्दी,गुरुग्राम, हरियाणा

शिक्षा सारथी

तमसो मा ज्योतिर्गमय

सितंबर 2025

प्रधान संरक्षक
नायब सिंह
मुख्यमंत्री, हरियाणा

संरक्षक
महीपाल ढांडा
शिक्षा मंत्री, हरियाणा

मुख्य संपादक
विनीत गर्ग
अतिरिक्त मुख्य सचिव,
विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा

संपादकीय परामर्श मंडल
डॉ. विवेक अग्रवाल
महानिदेशक,
मौलिक शिक्षा, हरियाणा
जितेंद्र कुमार
निदेशक,
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा
एवं
राज्य परियोजना निदेशक,
हरियाणा विद्यालय शिक्षा परियोजना परिषद्
गौरव कुमार
अतिरिक्त निदेशक
(प्रशासन)
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

संपादक
डॉ. देवियानी सिंह

उप-संपादक
डॉ. प्रदीप राठौर

डिजाइन एवं प्रिंटिंग
हरियाणा संवाद सोसायटी

मूल्य: 15 रुपये, **वार्षिक**: 150 रुपये

Published & Printed by **Parveen Sangwan** on behalf of President, Shiksha Lok Society-cum-Director General Secondary Education, Haryana. Published from office of Director General Secondary Education, Haryana, Plot No. 1-B, Shiksha Sadan, Sector - 5, Panchkula.

Printed by M/ s. J.K. Offset Graphic Pvt. Ltd. at its printing press B-278, Okhla, Industrial Area, Phase -I,
New Delhi-110020

Editor: Dr. Deviyani Singh.

"संसार में जितने प्रकार
की प्राप्तियाँ हैं, शिक्षा
सबसे बढ़कर है।"

» शिक्षक बनाएँगे भारत को ज्ञान की वैश्विक महाशक्ति : मुर्मु 5
» शिक्षक राष्ट्र के वर्तमान को ही नहीं,भविष्य को भी आकार देते हैं : प्रधानमंत्री 8
» शिक्षक रखता है मज़बूत, समावेशी और प्रगतिशील समाज की नींवः राज्यपाल 11
» सोनीपत की शिक्षिका सुनीता ढुल को राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार 12
» शिक्षक दिवस : दीप से दीप जलाने की साधना 14
» हरियाणा की शिक्षा व्यवस्था को मिला वैश्विक मंच पर सम्मान 15
» धरती को हरा-भरा बनाने के लिए सार्थक प्रयास 16
» प्रतियोगिता में दिखी विद्यार्थियों की प्रतिभा 20
» हिंदी मेरा ईमान है, हिंदी मेरी पहचान है 22
» अपशिष्ट को संसाधन में बदलने का हुनर 23
» पंचकूला का होनहार चंदन 24
» जड़ों से जुड़ाव हो तो ऐसा... 25
» खेल-खेल में विज्ञान 28
» क्यों असफल होते हैं बच्चे? 30
» सतरंगी इंद्रधनुष 31
» The Relevance of Teachers' Day 32
» From Counting on Fingers to Clicking on AI... 35
» Live 36
» A Dance with the Clouds 37
» Breaking the myths...Physical Education for Upliftment 38
» The Honour of the Homeland 39
» Be Ready for Success, but Also Be Prepared ... 40
» Unscripted Brilliance: Curiosity Fueled... 42
» International Literacy Day: Significance, History... 45
» Durga Puja and Navratri: A Celebration of Faith... 48

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में लेखकों की निजी राय हो सकती है।
यह आवश्यक नहीं कि विभाग उनसे सहमत हो।

गुरु गुण लिखा न जाए

'सब धरती कागद करूँ, लेखनि सब बनराय। सात समुद्र की मसि करूँ, गुरु गुण लिखा न जाय।' भारतीय संस्कृति में गुरु का स्थान सर्वोच्च माना गया है। गुरु केवल ज्ञान के दाता नहीं, बल्कि समाज निर्माण के भी प्रमुख स्तंभ होते हैं। शिष्य के जीवन को सँवारने और राष्ट्र को दिशा देने में उनका योगदान अनमोल है। यही कारण है कि आज भी हमारे साहित्य, इतिहास और परंपराओं में गुरु के प्रति श्रद्धा का भाव सर्वोपरि है।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने शिक्षकों के महत्त्व पर बल देते हुए अपने संदेश में कहा है कि गुरु वह शक्ति है जो राष्ट्र के भविष्य का निर्माण करती है। गुरु राष्ट्र निर्माण की सबसे मज़बूत नींव रखते हैं। प्रधानमंत्री ने यह भी स्पष्ट किया कि नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 का उद्देश्य ऐसे युवाओं का निर्माण करना है, जो ज्ञान और कौशल दोनों में सक्षम हों तथा राष्ट्र को आत्मनिर्भर भारत की ओर अग्रसर करें। यह संदेश हर शिक्षक को अपने कर्तव्य की गंभीरता और गरिमा का स्मरण कराता है।

हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी नई शिक्षा नीति को धरातल पर उतारने के लिए निरंतर प्रयत्नशील हैं। उनकी प्रतिबद्धता इस दिशा में उल्लेखनीय है कि हरियाणा के विद्यालयों में शिक्षा की गुणवत्ता बढ़े और विद्यार्थियों को विश्वस्तरीय अवसर मिलें। मुख्यमंत्री का यह दृष्टिकोण शिक्षा को केवल नौकरी तक सीमित नहीं रखता, बल्कि उसे चरित्र निर्माण और सामाजिक विकास का माध्यम बनाता है।

इसी क्रम में हरियाणा के शिक्षा मंत्री श्री महीपाल ढांडा भी शिक्षा व्यवस्था में सुधार के लिए सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। उन्होंने स्पष्ट किया है कि शिक्षक केवल पाठ्यक्रम पूरे करने तक सीमित न रहें, बल्कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास और नैतिक मूल्यों को भी सुदृढ़ करें। उनका दृष्टिकोण शिक्षा में मानवता और संस्कारों के समावेश पर केंद्रित है।

वास्तव में शिक्षकगण अपने परिश्रम, कर्तव्यपरायणता और त्याग के बल पर समाज को समृद्ध बनाते हैं। राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य की कल्पना तभी संभव है, जब हमारे शिक्षक अपने आदर्श आचरण और निष्कलंक चरित्र से विद्यार्थियों को प्रेरित करें। इस अवसर पर 'शिक्षा सारथी' परिवार सभी पाठकों को और विशेष रूप से गुरुजन को शिक्षक दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता है।

आइए, हम सब मिलकर यह संकल्प लें कि गुरु परंपरा की इस अमूल्य विरासत को आगे बढ़ाते हुए शिक्षा को राष्ट्रनिर्माण का सबसे सशक्त साधन बनाएँगे।

-संपादक

शिक्षक बनाएँगे भारत को ज्ञान की वैश्विक महाशक्ति : मुर्मु

डॉ. प्रदीप राठौर

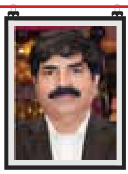

राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु ने 5 सितंबर, 2025, को शिक्षक दिवस के अवसर पर नई दिल्ली में आयोजित एक समारोह में देश भर के शिक्षकों को राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किए।

सभा को संबोधित करते हुए राष्ट्रपति ने सभी पुरस्कार विजेता शिक्षकों को हार्दिक बधाई दी। उन्होंने कहा कि उन्हें यह देखकर प्रसन्नता हुई है कि स्कूल के स्तर पर शिक्षा में समानता और समावेश के अच्छे संकेत दिखाई दे रहे हैं। स्कूल स्तर पर पुरस्कार विजेताओं में शिक्षिकाओं की प्रभावशाली संख्या है जो शिक्षकों की संख्या से थोड़ा ही कम है। यह भी महत्त्वपूर्ण है कि ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों के पुरस्कार विजेता शिक्षकों की संख्या, शहरी क्षेत्र के विद्यालयों के शिक्षकों की संख्या से अधिक है।

उन्होंने कहा कि भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन चाहते थे कि देशवासी उन्हें शिक्षक के रूप में याद करें। उनकी जयंती को शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है।'आचार्य देवो भव' की हमारी प्राचीन परंपरा के अनुसार, शिक्षक को सर्वाधिक महत्त्व देने के उनके उदात्त विचार के लिए, उन्होंने सभी देशवासियों की ओर से, डॉ. राधाकृष्णन जी की पावन स्मृति को सादर नमन किया।

उन्होंने कहा कि भोजन, वस्त्र और आवास की तरह ही, शिक्षा भी व्यक्ति की गरिमा और सुरक्षा के लिए आवश्यक है। संवेदनशील शिक्षक बच्चों में गरिमा और सुरक्षा की भावना जगाने का काम करते हैं। उन्होंने एक शिक्षिका के रूप में अपने समय को याद करते हुए उस समय को अपने जीवन का एक अत्यंत सार्थक काल-खंड बताया। राष्ट्रपति ने कहा कि आप सभी शिक्षकों के बीच आकर उनके अंदर की शिक्षिका का भाव जीवंत हो जाता है। उन्होंने अपने मूल-निवास के निकट के क्षेत्र में, लगभग दस वर्ष पहले एक छोटे से आवासीय विद्यालय की स्थापना की थी, जिसमें अनाथ, वंचित और कम सुविधा-सम्पन्न परिवारों के बच्चे शिक्षा प्राप्त करते हैं। उन बच्चों के जीवन में आशा तथा आत्मविश्वास के संचार को देखकर उन्हें बहुत संतोष का अनुभव होता है।

राष्ट्रपति ने कहा कि शिक्षा व्यक्ति को सक्षम बनाती है। कमज़ोर से कमज़ोर पृष्ठभूमि के बच्चे भी शिक्षा के बल पर प्रगति के आसमान को छू सकते हैं। बच्चों की उड़ान को शक्ति देने में स्नेही एवं निष्ठावान शिक्षक सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शिक्षकों के लिए सबसे बड़ा पुरस्कार यही है कि उनके विद्यार्थी उन्हें आजीवन याद रखें और परिवार, समाज तथा देश के लिए सराहनीय योगदान दें।

राष्ट्रपति ने कहा कि शिक्षकों का आचरण विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करता है। प्राचीन काल में, जब भारत को विश्व-गुरु माना जाता था, तब के शिक्षा-संबंधी नैतिक आदर्श आज के संदर्भ में भी उतने ही उपयोगी हैं। हमारी

परंपरा में शिक्षा प्राप्त करके जाने वाले शिष्यों को आचार्य समझाते थेः

यानि-यानि अस्माकं सुचरितानि,
तानि त्वया उपास्यानि,
नो इतराणि।

अर्थात् 'हमारे जो अच्छे काम हैं उनका अनुकरण करना, लेकिन हमारे अन्य कार्यों का अनुकरण मत करना।'

इससे यह स्पष्ट होता है कि आचार्य-गण यह स्वीकार करते थे कि उनका स्वयं का आचरण सदैव अनुकरणीय नहीं रहता। यह स्वाभाविक भी है। परंतु शिक्षकों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे यथासंभव अच्छे आचरण का उदाहरण ही विद्यार्थियों के लिए प्रस्तुत करें। विद्यार्थियों का चरित्र निर्माण करना शिक्षक का मुख्य कर्तव्य है। नैतिक आचरण करने वाले संवेदनशील और कर्तव्यनिष्ठ विद्यार्थी उन विद्यार्थियों से बेहतर होते हैं जो केवल प्रतिस्पर्धा, किताबी-ज्ञान और स्वार्थ के लिए तत्पर रहते हैं। एक अच्छे शिक्षक में भावना और बुद्धि, दोनों पक्ष प्रबल होते हैं। भावना और बुद्धि के समन्वय का प्रभाव विद्यार्थियों पर भी पड़ता है।

राष्ट्रपति ने कहा कि स्मार्ट ब्लैकबोर्ड, स्मार्ट क्लासरूम और अन्य आधुनिक सुविधाओं का अपना महत्त्व है। लेकिन सबसे महत्त्वपूर्ण होते हैं- स्मार्ट शिक्षक। स्मार्ट शिक्षक वैसे शिक्षक होते हैं जो अपने विद्यार्थियों के विकास से जुड़ी ज़रूरतों को समझते हैं। स्मार्ट शिक्षक स्नेह और संवेदनशीलता के साथ अध्ययन की प्रक्रिया को रोचक और प्रभावी बनाते हैं। ऐसे शिक्षक विद्यार्थियों को समाज और राष्ट्र की ज़रूरतों को पूरा करने में सक्षम बनाते हैं।

उन्होंने कहा कि आधुनिक भारत की निर्माता विभूतियों में सावित्रीबाई फुले जी का नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित है। उन्नीसवीं सदी में उन्होंने बालिका विद्यालय की स्थापना की। वह एक क्रांतिकारी कदम था। आधुनिक भारत में स्त्री शिक्षा की आधारशिला रखने वाली सावित्रीबाई फुले जी की स्मृति को उन्होंने सादर नमन किया।

राष्ट्रपति ने कहा कि बालिकाओं की शिक्षा को सर्वाधिक महत्त्व दिया जाना चाहिए। बालिकाओं की शिक्षा

में निवेश करके हम अपने परिवार, समाज और राष्ट्र के निर्माण में एक अमूल्य निवेश करते हैं। उन्होंने कहा कि बालिकाओं को सर्वोत्तम संभव शिक्षा प्रदान करना महिलाओं के नेतृत्व वाले विकास को प्रोत्साहित करने का सबसे प्रभावी तरीका है। उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों के विस्तार और वंचित वर्गों की बालिकाओं को विशेष शिक्षा-सुविधाएँ प्रदान करने पर बल देती है। लेकिन शिक्षा से जुड़ी किसी भी पहल की सफलता मुख्य रूप से शिक्षकों पर ही निर्भर करती है। उन्होंने शिक्षकों से कहा कि वे बालिकाओं को शिक्षित करने में जितना अधिक योगदान देंगे, शिक्षक के रूप में उनका जीवन उतना ही सार्थक होगा।

राष्ट्रपति ने कहा कि केंद्र और राज्य सरकारों, विद्यालयों के प्रबन्धकों और सभी शिक्षकों का यह दायित्व है कि बेटियों की सुविधाओं और सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दें। उनका अनुभव है कि सुविधा और सुरक्षा मिलने पर बेटियाँ असाधारण योग्यता का प्रदर्शन करती हैं। उन्हें यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई है कि उच्च शिक्षा के क्षेत्र में ग्रॉस एनरोलमेंट रेशो के मानक पर पिछले कुछ वर्षों के दौरान हमारी बेटियों की संख्या अधिक रही है। यह विशेष प्रसन्नता की बात है कि STEM एनरोलमेंट्स में बेटियों की संख्या 43 प्रतिशत तक पहुँच गई है। इसके लिए उन्होंने बेटियों के अभिभावकों, शिक्षकों तथा शिक्षा से जुड़े सभी संस्थानों और

विभागों की सराहना की।

उन्होंने शिक्षकों से बालिकाओं सहित उन सभी विद्यार्थियों पर विशेष ध्यान देने का आग्रह किया, जो अपेक्षाकृत संकोची होते हैं या कम सुविधा संपन्न पृष्ठभूमि से आते हैं।

उन्होंने कहा कि भारत को 'स्किल कैपिटल ऑफ द वर्ल्ड' बनाना हमारी राष्ट्रीय प्राथमिकताओं में से एक है। हमारी परंपरा में विश्वकर्मा को भगवान का दर्जा दिया गया है। वोकेशनल एजुकेशन पर विशेष बल देकर हम अपनी प्राचीन परंपरा के अनुरूप आधुनिक विकास के पथ पर आगे बढ़ रहे हैं। स्किल ट्रेनर्स और मास्टर ट्रेनर्स को पुरस्कार प्रदान करने की परंपरा को स्थापित करने और उसे आगे बढ़ाने के लिए उन्होंने केंद्र सरकार की सराहना की।

राष्ट्रपति ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति का उद्देश्य भारत को ज्ञान की वैश्विक महाशक्ति बनाना है। इसके लिए यह अनिवार्य है कि हमारे शिक्षकों की पहचान विश्व के सर्वश्रेष्ठ शिक्षकों के रूप में हो। हमारे संस्थानों और शिक्षकों को शिक्षा के तीनों क्षेत्रों- स्कूली शिक्षा, उच्च शिक्षा और कौशल संबंधी शिक्षा में सक्रिय योगदान देना होगा। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि हमारे शिक्षक अपने निर्णायक योगदान से भारत को ज्ञान की वैश्विक महाशक्ति के रूप में प्रतिष्ठित करेंगे।

drpradeeprathore@gmail.com

शिक्षक राष्ट्र के वर्तमान को ही नहीं, भविष्य को भी आकार देते हैं : प्रधानमंत्री

डॉ. सुदेश रानी

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने शिक्षक दिवस के उपलक्ष्य में नई दिल्ली में राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता शिक्षकों को संबोधित किया। श्री मोदी ने भारतीय समाज में शिक्षकों के प्रति स्वाभाविक सम्मान की सराहना करते हुए उन्हें राष्ट्र-निर्माण में एक सशक्त ताकत बताया। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि शिक्षकों का सम्मान केवल केवल एक रिवाज नहीं, बल्कि उनके आजीवन समर्पण और प्रभाव का सम्मान है।

प्रधानमंत्री ने राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार प्राप्त करने वाले सभी शिक्षकों को हार्दिक बधाई दी। उन्होंने कहा कि उनका चयन उनकी कड़ी मेहनत और उनके अटूट समर्पण को मान्यता प्रदान करता है। प्रधानमंत्री ने इस बात पर प्रकाश डाला कि शिक्षक न केवल वर्तमान को, बल्कि राष्ट्र के भविष्य को भी आकार देते हैं और इससे उनकी भूमिका राष्ट्रीय सेवा के सर्वोच्च रूपों में से एक बन जाती है। उन्होंने आगे कहा कि इस वर्ष के पुरस्कार विजेताओं की तरह, देश भर में लाखों शिक्षक निष्ठा,

प्रतिबद्धता और सेवा भावना के साथ शिक्षा के प्रति समर्पित हैं। इस अवसर पर उन्होंने राष्ट्र-निर्माण में शामिल ऐसे सभी शिक्षकों के योगदान की सराहना की।

प्रधानमंत्री ने भारत की प्रगति में शिक्षकों की भूमिका की सराहना करते हुए कहा कि राष्ट्र ने हमेशा गुरु-शिष्य परंपरा का सम्मान किया है। भारत में गुरु केवल ज्ञान प्रदाता ही नहीं, बल्कि जीवन के मार्गदर्शक भी होते हैं। श्री मोदी ने कहा, जैसे-जैसे हम एक विकसित भारत के निर्माण की दृष्टि से आगे बढ़ रहे हैं, यह परंपरा हमारी ताकत बनी हुई है। शिक्षक इस विरासत के जीवंत प्रतीक हैं। शिक्षक न केवल साक्षरता प्रदान कर रहे हैं, बल्कि युवा पीढ़ी में राष्ट्र के लिए जीने की भावना भी भर रहे हैं।

प्रधानमंत्री ने इस बात पर ज़ोर दिया कि शिक्षक एक मज़बूत राष्ट्र और सशक्त समाज की आधारशिला हैं। उन्होंने कहा कि शिक्षक पाठ्यक्रम और पाठ्यचर्या में समयबद्ध बदलाव की ज़रूरत के प्रति भी संवेदनशील होते हैं और शिक्षा को समय की बदलती माँगों के अनुरूप बनाते हैं। उन्होंने कहा कि देश के लिए किए जा रहे सुधारों में भी यही भावना झलकती है। सुधार निरंतर और समय के अनुकूल होने चाहिए, यह हमारी सरकार की दृढ़ प्रतिबद्धता है।

उन्होंने बताया कि जीएसटी परिषद् ने एक ऐतिहासिक फैसला लिया है। जीएसटी अब और भी सरल हो गया है। अब मुख्य रूप से जीएसटी की दो श्रेणियाँ हैं- 5 प्रतिशत व 18 प्रतिशत। ये नई दरें नवरात्रि के पहले दिन 22 सितंबर से लागू होंगी। करोड़ों परिवारों के लिए ज़रूरी चीज़ें और सस्ती हो जाएँगी। उन्होंने कहा कि जीएसटी स्वतंत्र भारत के सबसे बड़े आर्थिक सुधारों में से एक था। इसने देश को कई करों के जटिल जाल से मुक्ति दिलाई। उन्होंने कहा कि अब जीएसटी सुधार से गरीबों, नवमध्यम वर्ग, मध्यम वर्ग, किसानों, महिलाओं, छात्रों और युवाओं को काफी राहत मिलने की उम्मीद है।

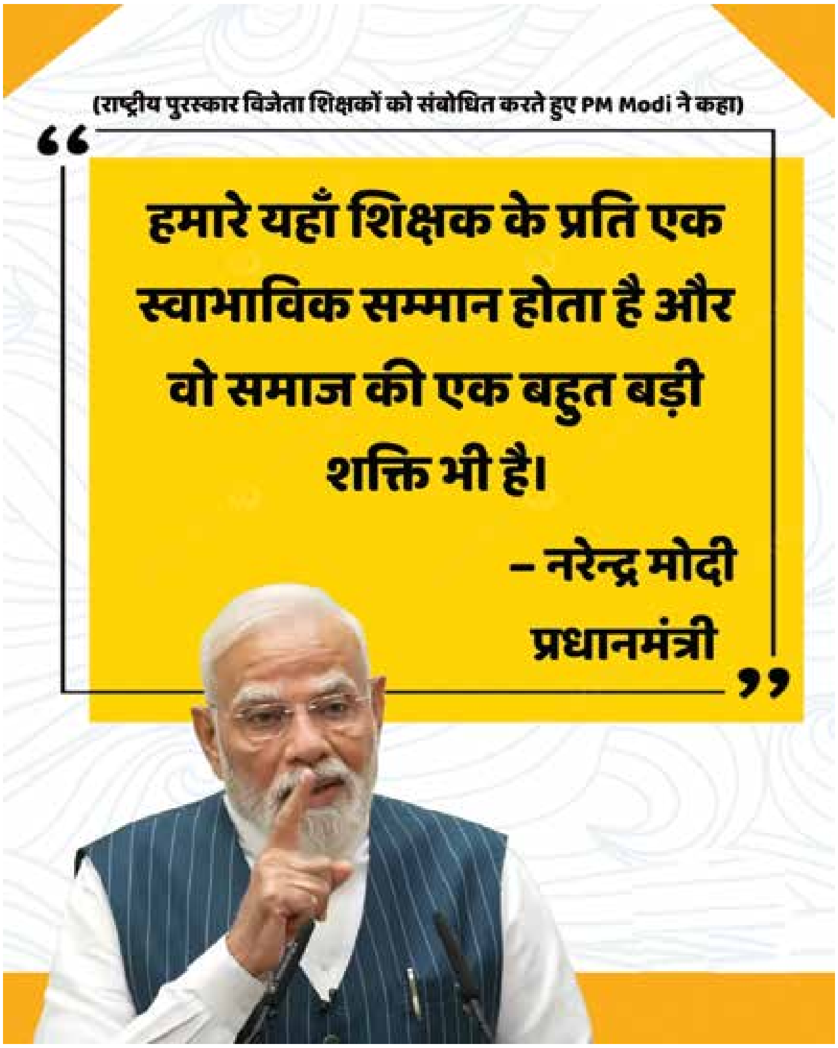

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सरकार के मार्गदर्शक सिद्धांत 'नागरिक देवो भव' को दोहराया और प्रत्येक भारतीय के कल्याण के प्रति इसकी प्रतिबद्धता पर ज़ोर दिया। उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि इस वर्ष कर राहत न केवल जीएसटी की कटौती के माध्यम से मिली है, बल्कि आयकर में भी उल्लेखनीय कटौती की गई है। 12 लाख रुपये तक की आय अब कर-मुक्त है, जिससे करदाताओं को काफी राहत मिली है।

श्री मोदी ने इस बात पर ज़ोर दिया कि भारत में मुद्रास्फीति वर्तमान में बहुत कम और नियंत्रित स्तर पर है, जो सच्चे जन-हितैषी शासन को प्रतिबिंबित करती है। परिणामस्वरूप, भारत की विकास दर लगभग आठ प्रतिशत तक पहुँच गई है, जिससे यह दुनिया की सबसे तेज़ी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्था बन गई है। यह उल्लेखनीय उपलब्धि 140 करोड़ भारतीयों की शक्ति और दृढ़ संकल्प का प्रमाण है।

प्रधानमंत्री ने भारत को आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से सुधारों की यात्रा जारी रखने की सरकार की प्रतिबद्धता की पुष्टि की। श्री मोदी ने कहा- आत्मनिर्भर भारत केवल एक नारा नहीं है, बल्कि एक समर्पित अभियान है। उन्होंने देश भर के सभी शिक्षकों से प्रत्येक छात्र में आत्मनिर्भरता की भावना जगाने का आह्वान किया। प्रधानमंत्री ने सरल भाषा और स्थानीय बोलियों में आत्मनिर्भर भारत के महत्त्व को समझाने में शिक्षकों की महत्त्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने शिक्षकों से छात्रों को यह समझने के लिए प्रेरित करने का आग्रह किया कि दूसरों पर निर्भर एक

"मस्तिष्क के पोषण के प्रति शिक्षकों का समर्पण एक मज़बूत और उज्ज्वल भविष्य की नींव है। उनकी प्रतिबद्धता और करुणा उल्लेखनीय है। हम एक प्रतिष्ठित विद्वान और शिक्षक, डॉ. एस. राधाकृष्णन के जीवन और विचारों को भी उनकी जयंती पर याद करते हैं।"

-प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी

राष्ट्र कभी भी उतनी तेज़ी से प्रगति नहीं कर सकता, जितनी उसकी वास्तविक क्षमता है। प्रधानमंत्री ने शिक्षकों को छात्रों को ऐसे अभ्यासों में शामिल करने के लिए प्रोत्साहित किया, जो दैनिक जीवन में आयातित उत्पादों की उपस्थिति को उजागर करते हों और स्वदेशी विकल्पों के उपयोग को बढ़ावा देते हों। उन्होंने भारत द्वारा खाद्य तेल के आयात पर सालाना 1 लाख करोड़ रुपये से अधिक खर्च करने का उदाहरण देते हुए इस बात पर ज़ोर दिया कि राष्ट्रीय विकास के लिए आत्मनिर्भरता आवश्यक है।

स्वदेशी को बढ़ावा देने की महात्मा गांधी की विरासत का उल्लेख करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि अब इस पीढ़ी का कर्तव्य है कि वह उस मिशन को पूरा करे। श्री मोदी ने ज़ोर देकर कहा कि प्रत्येक छात्र को खुद से पूछना चाहिए, मैं अपने देश की किसी भी ज़रूरत को पूरा करने के लिए क्या कर सकता हूँ? राष्ट्र की ज़रूरतों से खुद को जोड़ना बहुत ज़रूरी है। श्री मोदी ने आगे कहा कि यही वह देश है जो हमें जीवन में आगे बढ़ाता है, हमें बहुत कुछ देता है, इसलिए प्रत्येक छात्र को हमेशा अपने दिल में यह विचार रखना चाहिएः मैं अपने देश को क्या दे सकता हूँ और देश की किन ज़रूरतों को पूरा करने में मैं मदद कर सकता हूँ?

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने नवाचार, विज्ञान और प्रौद्योगिकी में भारतीय छात्रों की बढ़ती रुचि की सराहना की और लाखों लोगों को वैज्ञानिक और नवोन्मेषक बनने के लिए प्रेरित करने में चंद्रयान मिशन की सफलता को इसका श्रेय दिया। उन्होंने याद किया कि कैसे ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला की अंतरिक्ष मिशन से वापसी ने उनके स्कूल समुदाय को ऊर्जावान बनाया और शिक्षा के अलावा युवाओं की सोच को आकार देने और उनका मार्गदर्शन करने में शिक्षकों की महत्त्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित किया।

प्रधानमंत्री ने अटल नवाचार मिशन और अटल टिंकरिंग लैब्स के माध्यम से अब उपलब्ध समर्थन पर प्रकाश डाला, जिनकी देशभर में 10,000 से अधिक प्रयोगशालाएँ पहले ही स्थापित हो चुकी हैं। सरकार ने भारत भर के युवा नवोन्मेषकों को नवाचार के अधिक अवसर प्रदान करने के लिए अतिरिक्त 50,000 प्रयोगशालाओं के निर्माण को मंजूरी दी है। श्री मोदी ने रेखांकित किया, इन पहलों की सफलता काफी हद तक शिक्षकों के समर्पित प्रयासों पर निर्भर करती है, जो अगली पीढ़ी के नवोन्मेषकों को मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।

श्री मोदी ने युवाओं को डिजिटल रूप से सशक्त बनाने और साथ ही उन्हें डिजिटल दुनिया के हानिकारक प्रभावों से बचाने पर सरकार के दोहरे विशेष ध्यान पर प्रकाश डाला। उन्होंने संसद में हाल ही में पारित ऑनलाइन गेमिंग को विनियमित करने वाले कानून का हवाला दिया, जिसका उद्देश्य छात्रों और परिवारों को व्यसन-लिप्तता, आर्थिक रूप से शोषणकारी और हिंसक कंटेंट से बचाना है।

प्रधानमंत्री ने शिक्षकों से इन जोखिमों को लेकर छात्रों में जागरूकता बढ़ाने का आग्रह किया। उन्होंने वैश्विक गेमिंग क्षेत्र में विशेष रूप से पारंपरिक भारतीय खेलों का लाभ उठाकर और नवोन्मेषी स्टार्टअप्स को समर्थन देकर भारत की उपस्थिति को बढ़ावा देने के लिए सरकार की प्रतिबद्धता पर ज़ोर दिया। श्री मोदी ने कहा, छात्रों को ज़िम्मेदार गेमिंग और डिजिटल अवसरों के बारे में शिक्षित करके, सरकार इस बढ़ते उद्योग में युवाओं के लिए आशाजनक करियर विकल्प बनाने की परिकल्पना करती है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने शिक्षकों से 'वोकल फॉर लोकल' अभियान में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने का आग्रह किया, जो स्वदेशी उत्पादों को भारत के गौरव और स्वाभिमान के प्रतीक के रूप में अपनाने के लिए प्रोत्साहित करता है। उन्होंने छात्रों को ऐसी स्कूल परियोजनाओं और गतिविधियों में शामिल करने पर ज़ोर दिया जो 'मेड इन इंडिया' वस्तुओं की पहचान करती हैं और उनका जश्न मनाती हैं।

प्रधानमंत्री ने ऐसे कार्य सुझाए, जो छात्रों और उनके परिवारों को घर पर स्थानीय उत्पादों के उपयोग की पहचान करने में मदद करते हैं और कम उम्र से ही जागरूकता बढ़ाते हैं। उन्होंने कला और शिल्प कक्षाओं तथा स्कूल समारोहों में स्वदेशी सामग्रियों के उपयोग को भी प्रोत्साहित किया, ताकि भारतीय निर्मित वस्तुओं के प्रति गर्व की भावना का आजीवन पोषण हो सके।

श्री मोदी ने स्कूलों से 'स्वदेशी सप्ताह' और 'स्थानीय उत्पाद दिवस' जैसी पहल आयोजित करने का आह्वान किया, जहाँ छात्र अपने परिवारों से स्थानीय उत्पाद लाएँ और उनकी कहानियाँ साझा करें। उन्होंने गहन जागरूकता बढ़ाने के लिए इन उत्पादों की उत्पत्ति, निर्माताओं और राष्ट्रीय महत्त्व पर चर्चा करने पर ज़ोर दिया। श्री मोदी ने कहा, छात्रों और स्थानीय कारीगरों के बीच संवाद होना चाहिए, जिसमें पीढ़ियों से चली आ रही स्वदेशी शिल्प और विनिर्माण की मूल्यवत्ता पर प्रकाश डाला जाए। स्थानीय उत्पादों के प्रति गर्व पैदा करने के लिए जन्मदिन जैसे अवसरों पर भारत में निर्मित उपहारों को प्रोत्साहित किया जा सकता है। ऐसे प्रयास युवाओं में देशभक्ति, आत्मविश्वास और श्रम के प्रति सम्मान की भावना का पोषण करेंगे, और उनकी व्यक्तिगत सफलता को राष्ट्र की प्रगति से जोड़ेंगे।

प्रधानमंत्री ने विश्वास व्यक्त किया कि शिक्षक, राष्ट्र-निर्माण के इस मिशन को समर्पण के साथ आगे बढ़ाते रहेंगे। श्री मोदी ने सभी पुरस्कार विजेता शिक्षकों को उनके अनुकरणीय योगदान के लिए बधाई देते हुए अपने संबोधन का समापन किया।

हिंदी अध्यापिका
राजकीय माध्यमिक विद्यालय
सैक्टर-25, पंचकूला

शिक्षक रखता है मज़बूत, समावेशी और प्रगतिशील समाज की नींवः राज्यपाल

हरियाणा के राज्यपाल प्रो. असीम कुमार घोष ने शिक्षक दिवस पर हरियाणा और पूरे देश के शिक्षक समुदाय को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ दीं।

राज्यपाल ने कहा कि शिक्षक युवा मस्तिष्कों को ज्ञान, मूल्यों और बुद्धिमत्ता से पोषित करके राष्ट्र निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उनका निःस्वार्थ समर्पण न केवल छात्रों के भविष्य को आकार देता है, बल्कि एक मज़बूत, समावेशी और प्रगतिशील समाज की नींव भी रखता है।

उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि शिक्षक हमेशा से भारत की विकास गाथा के पीछे मार्गदर्शक शक्ति रहे हैं तथा पीढ़ियों को राष्ट्र के लिए सार्थक योगदान देने के लिए प्रेरित करते रहे हैं।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी)- 2020 के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए राज्यपाल ने कहा कि यह भारत के शैक्षिक परिवर्तन के लिए एक भविष्यवादी रोडमैप प्रदान करती है।

उन्होंने शिक्षकों से राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के सफल कार्यान्वयन में सक्रिय रूप से भाग लेने का आह्वान किया, जिसका उद्देश्य छात्रों में समग्र शिक्षा, रचनात्मकता, नवाचार और जिज्ञासा की भावना को बढ़ावा देना है। प्रो. घोष ने इस बात पर ज़ोर दिया कि भारत को एक ज्ञान-संचालित और विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धी राष्ट्र बनाने के लक्ष्य को साकार करने में शिक्षक अग्रणी भूमिका निभाते रहेंगे।

मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी के नेतृत्व में शिक्षा के क्षेत्र में हरियाणा की प्रगति के बारे में बात करते हुए, राज्यपाल प्रो. घोष ने संतोष व्यक्त किया कि राज्य ने स्कूल नामांकन, डिजिटल पहल, कौशल विकास और उच्च शिक्षा सहित कई मापदंडों पर लगातार अच्छा प्रदर्शन किया है।

राज्यपाल ने कहा कि ग्रामीण और शहरी शिक्षा प्रणालियों को मज़बूत करने के लिए हरियाणा की प्रतिबद्धता, समाज के सभी वर्गों के लिए समान और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने के राज्य के संकल्प को दर्शाती है।

राज्यपाल ने सभी से शिक्षकों की अथक और समर्पित सेवा को स्वीकार करने और सम्मान देने का आग्रह किया है, जो न केवल अपने छात्रों, बल्कि पूरे राष्ट्र के भाग्य को आकार देते हैं।

-शिक्षा सारथी डेस्क

राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य के निर्माता हैं शिक्षक

शिक्षक केवल ज्ञान का प्रकाश ही नहीं फैलाते, बल्कि अपने आचार-विचार और मार्गदर्शन से विद्यार्थियों के जीवन को दिशा देकर राष्ट्र की नींव को भी सुदृढ़ करते हैं। हमारे जीवन में शिक्षक का योगदान अनमोल है। आज के युग में जहाँ डिजिटल तकनीक हर क्षेत्र में बदलाव ला रही है, वहाँ शिक्षक की भूमिका और भी महत्त्वपूर्ण बन गई है। एक शिक्षक को समयानुकूल खुद को अपडेट करते हुए नई तकनीकों को अपनाना चाहिए ताकि विद्यार्थियों को आधुनिक शिक्षा मिल सके। हरियाणा सरकार ने शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी सुधार किए हैं। शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम को सशक्त किया जा रहा है। डिजिटल शिक्षा के माध्यम से हर छात्र तक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पहुँचाने का प्रयास किया जा रहा है।

मैं मानता हूँ कि प्रत्येक शिक्षक का उद्देश्य केवल विषय की पढ़ाई नहीं, बल्कि जीवन के मूल्य, समाज के प्रति जिम्मेदारी और राष्ट्र के प्रति समर्पण का संचार करना भी है। आइए, हम सब मिलकर हरियाणा को शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी राज्य बनाएँ। आपके अथक परिश्रम से ही आने वाली पीढ़ी सशक्त, जागरूक और देशप्रेमी बनेगी।

महीपाल ढांडा
शिक्षा मंत्री, हरियाणा

सोनीपत की शिक्षिका सुनीता ढुल को राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार

दीपा रानी

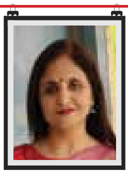

किसी राष्ट्र के विकास में उसकी भावी पीढ़ी को गढ़ने और तराशने में शिक्षकों की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण होती है। शिक्षक की महत्ता का गुणगान उसके द्वारा दिए गए ज्ञान के कारण ही होता आया है। आज भी अनेक शिक्षक अपनी निष्ठा, मेहनत और लगन से विद्यार्थियों का उचित मार्गदर्शन करके देश के भविष्य को सँवार रहे हैं।

ऐसी ही एक शिक्षिका हैं डॉ. सुनीता ढुल, जिन्हें इस वर्ष राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार से नवाज़ा गया है। यह पुरस्कार उन्हें विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास, शैक्षिक नवाचारों और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए प्रदान किया गया है।

डॉ. सुनीता ढुल ने 2014 में हरियाणा के पानीपत जिले के मछरौली गाँव में भूगोल प्रवक्ता के पद पर हरियाणा शिक्षा विभाग में अपने शैक्षिक सफ़र की शुरुआत की। इससे पहले वे 1996 से ही अध्यापन कार्य कर रही थीं। बचपन से ही उन्होंने एक सपना संजोया था- शिक्षिका बनने का। वे शिक्षिका बनकर उन सभी बच्चों को शिक्षा देना चाहती थीं, जो किसी भी कारणवश शिक्षा से वंचित रह जाते हैं। उनकी कड़ी मेहनत, लगन और परिश्रम से ही उनका यह सपना साकार हुआ और देश के भावी राष्ट्र-निर्माताओं के लिए जो सपने उन्होंने देखे थे, वे पूरे हुए। उनका अध्यापन सफ़र अभी जारी है। अपने 29 वर्षों के अनुभव के बाद भी उनका जुनून कम नहीं हुआ है। आज भी वे उतनी ही तन्मयता, दृढ़ निश्चय और समर्पण से पढ़ाती हैं, जैसे सफ़र की शुरुआत अभी हुई हो।

उनका केंद्र-बिंदु हमेशा से ही उनके विद्यार्थी रहे हैं। मछरौली विद्यालय में उन्होंने छात्र विद्यालय प्रबंधन समिति बनाई, जिसकी वे मुखिया थीं और लगभग 23 बच्चे इसके सदस्य थे। विद्यालय के लगभग सभी महत्त्वपूर्ण कार्य इन्हीं विद्यार्थियों द्वारा किए जाते थे। प्रत्येक माह विद्यालय की मुखिया तथा समिति अध्यक्ष की अध्यक्षता में बैठक का आयोजन होता था और जो भी कमियाँ सामने आती थीं, उन्हें दूर कर सुधार किया जाता था। इससे विद्यालय में सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिले। अनुशासन और शैक्षिक स्तर में प्रगति हुई।

विद्यार्थियों में पठन-कौशल का विकास हो, इसके लिए उन्होंने गाँववालों की सहायता से पुस्तकालय की स्थापना करवाई। अध्यापन के साथ-साथ प्रयोगात्मक भौगोलिक गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों में व्यावहारिक ज्ञान और अपनी संस्कृति से जोड़ने के लिए उन्होंने जिला स्तरीय प्रोजेक्ट तैयार किया- सरस्वती उद्गम स्थल।

मछरौली, पानीपत के अध्यापन कार्यकाल में उन्होंने अनेक सामाजिक मुद्दों जैसे पॉलिथीन का प्रयोग न करना, स्वच्छता अभियान, कन्या भ्रूण हत्या, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, नुक्कड़ नाटक, पर्यावरण-सुरक्षा आदि अभियानों में बढ़-चढ़कर भाग लिया। एक फर्स्ट एड लेक्चरर होते हुए उन्होंने कई ब्रिगेड बनाईं। उनकी 12 ब्रिगेड वर्तमान में कार्यरत हैं। उन्होंने अपने विद्यार्थियों की जिला स्तर और राज्य स्तर पर अनेक प्रतियोगिताओं में भागीदारी सुनिश्चित की। केवल भागीदारी ही नहीं, बल्कि विद्यार्थियों

ने अनेक पुरस्कार प्राप्त करके विद्यालय का नाम रोशन किया। इन प्रतियोगिताओं से विद्यार्थियों में सेवा-भावना, मानवता के गुण और नैतिक मूल्यों का विकास हुआ।

जिला स्तर पर आयोजित होने वाले सभी राष्ट्रीय पर्वों में उनके विद्यालय का अग्रणी योगदान रहा, जिसमें उनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। उनके प्रयासों से विद्यालय में नामांकन में वृद्धि हुई और परीक्षा-परिणामों में भी सुधार हुआ।

लगभग पाँच वर्ष पानीपत के मछरौली गाँव में सेवाएँ देने के बाद उनका तबादला राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, मुरथल अड्डा (सोनीपत) में हुआ। यह एक कन्या विद्यालय था और बचपन से ही उन्होंने लड़कियों की प्रगति का जो सपना देखा था, वह अब साकार होता नज़र आ रहा था। विद्यालय में आते ही उन्हें एनएसएस और हाउस इंचार्ज का कार्यभार मिला। उन्होंने अपने भूगोल विषय को इतना रुचिकर बनाया कि धीरे-धीरे विद्यार्थियों की संख्या बढ़ने लगी। उन्होंने अपने कक्षा-कक्ष को सही मायने में एक आनंददायी कक्ष बना दिया और ऐसी शिक्षण पद्धतियाँ अपनाईं, जिससे विद्यार्थी अपने विषयों को अधिक प्रभावी ढंग से समझ सकें। इसका परिणाम यह रहा कि आज उनके पढ़ाए हुए अनेक विद्यार्थी अच्छे मुकाम पर हैं। इससे उनका शिक्षिका बनने का सपना सार्थक हो रहा है।

बहुआयामी प्रतिभा की धनी डॉ. सुनीता ढुल केवल अध्यापन कार्य तक सीमित नहीं रहीं। वे अपने विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भी निरंतर जुटी रहीं। वर्ष 2022 में वे अपने जिले की सांस्कृतिक समन्वयक बनीं और हरियाणवी संस्कृति को राष्ट्रीय स्तर पर पहुँचाया। उनके विद्यालय की टीम ने राष्ट्रीय स्तर पर तृतीय स्थान प्राप्त कर पूरे प्रदेश का नाम रोशन किया। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर करनाल में भूतपूर्व मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल जी द्वारा उनकी दस छात्राओं को 11-11 हज़ार रुपये का नगद पुरस्कार प्राप्त हुआ।

अपने अध्यापन के साथ उन्होंने रेडक्रॉस नेशनल मास्टर-ट्रेनर का कोर्स किया और बेसिक फर्स्ट एड तथा जीवन-कौशल की ट्रेनिंग विद्यार्थियों, शिक्षकों और समुदाय के लगभग 14,000 हितधारकों को दी। यह कार्य आज भी जारी है। अध्यापन के साथ-साथ विभाग की अन्य गतिविधियों में भी उनकी सक्रिय भूमिका रही है-

कक्षा 6 से 8 की उड़ान पाठ्यपुस्तक के लेखन में योगदान, भूगोल मॉड्यूल लेखन की टीम का महत्त्वपूर्ण हिस्सा, दीक्षा पोर्टल पर उपलब्ध कार्यपत्रकों का निर्माण और समीक्षा, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय जर्नल्स में प्रकाशित लेख, जिला स्तर पर एफएलएन की रिसोर्स पर्सन, विभाग की स्थायी रिसोर्स ग्रुप की सदस्य, 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' और 'कन्या भ्रूण हत्या' जैसी अंतरराष्ट्रीय मुहिम में जिला स्तर पर भूमिका, जिले की सांस्कृतिक समन्वयक, टाबर-उत्सव और थिएटर वर्कशॉप के आयोजन में योगदान, रेडक्रॉस सोसाइटी की नेशनल मास्टर ट्रेनर, कई राज्य स्तरीय टीमों का भी हिस्सा रही हैं डॉ.सुनीता ढुल।

आज भी वे अपने सिद्धांत 'इम्प्रूव टू प्रूव' पर काम करती हैं। उनका कहना है कि वे जीवन भर कुछ न कुछ सीखती रहेंगी और अपने विद्यार्थियों को सिखाती रहेंगी। उनके अनुसार, जो समाज हमें इतना कुछ देता है, हमें भी एक शिक्षक होने के नाते उस समाज को कुछ लौटाना चाहिए। यह हम अपने विद्यार्थियों का, जो हमारे देश का भविष्य हैं, सर्वांगीण विकास करके कर सकते हैं। ऐसे प्रेरणादायक शिक्षक पर हम सभी को गर्व है। उनकी प्रेरणा से शिक्षा-जगत् में नई ऊर्जा का संचार होगा।

पीजीटी फाइन आर्ट्स
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
सैक्टर-19, पंचकूला, हरियाणा

यह सम्मान मेरे लिए गर्व ही नहीं, प्रेरणा भी है

मेरे जीवन का वह क्षण जब मैंने हमारे देश की माननीय राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू से राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार प्राप्त किया, किसी सपने से कम नहीं था। मेरे लिए यह सम्मान केवल एक पुरस्कार नहीं, बल्कि लाइफ़ टाइम अचीवमेंट जैसा है। साथ ही एक बड़ी ज़िम्मेदारी भी, ताकि मैं भविष्य में और अधिक सार्थक कार्य कर सकूँ।

जब माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी से आमने-सामने बात करने का अवसर मिला, तो मन सचमुच भाव-विभोर हो उठा। उस समय मैंने महसूस किया कि एक शिक्षिका के रूप में मुझे केवल पढ़ाना ही नहीं, बल्कि बच्चों के सपनों को दिशा देने और उन्हें समाज का सशक्त नागरिक बनाने का भी दायित्व निभाना है। राष्ट्रपति महोदया ने विशेष रूप से बेटियों की शिक्षा पर ज़ोर दिया और यह ज़िम्मेदारी हम महिलाओं के कंधों पर और भी अधिक बढ़ गई। उन्होंने कहा कि बेटियों को पढ़ाना मात्र शिक्षा देना नहीं, बल्कि उनके भीतर चारित्रिक गुणों और नैतिक मूल्यों का विकास करना भी है। उनके ये शब्द मेरे लिए एक संकल्प बन गए कि मैं हर बेटी को उसकी असली ताक़त पहचानने और समाज में आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ने में मदद करूँगी।

यह अनुभव मेरे जीवन का ऐसा स्वर्णिम अध्याय है, जिसने मुझे यह विश्वास दिलाया कि एक शिक्षिका के प्रयास केवल बच्चों तक ही सीमित नहीं रहते, बल्कि वह पूरे समाज को नई दिशा देने की क्षमता रखती है। यह सम्मान मेरे लिए गर्व ही नहीं, बल्कि आने वाले कल के लिए प्रेरणा भी है।

-डॉ. सुनीता ढुल
राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार विजेता शिक्षिका- 2025

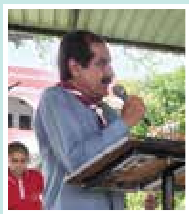

धूमधाम से मनाया गया शिक्षक दिवस

शिक्षक दिवस को मनाये जाने के समाचार प्रदेश भर से प्राप्त हुए हैं। इस अवसर पर जींद के पीपलथा में भी एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन हुआ। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में जिला जींद के पूर्व जिला संगठन आयुक्त स्काउट श्री गुलशन कुमार उपस्थित रहे। उन्होंने कहा कि शिक्षक केवल ज्ञान देने वाले ही नहीं, अपितु जीवन के मूल्य, नैतिकता, अनुशासन तथा सिद्धांतों की सीख देने वाले भी होते हैं। जीवन की सही दिशा देने में शिक्षक की भूमिका अतुलनीय होती है। उन्होंने विशेष रूप से यह भी कहा कि एक शिक्षक का कर्तव्य केवल पुस्तक ज्ञान तक सीमित नहीं है, अपितु वे समाज के निर्माता भी हैं।

विद्यालय प्राचार्य डॉ.भूप सिंह ने अपने प्रेरणादायक संबोधन में वर्तमान सामाजिक-शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में गुरु की महत्ता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि गुरुजन समाज के लिए आदर्श होते हैं, जो विद्यार्थियों को योग्य नागरिक बनने की प्रेरणा देते हैं। उन्होंने सभी शिक्षकों से अपने कर्तव्य का निर्वहन पूर्ण निष्ठा, लगन एवं मेहनत से करने का आह्वान किया।

फरीदाबाद ज़िले के सराय ख्वाजा में भी इस दिन विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें विशेष सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन हुआ। बाद में प्रतिभागी विद्यार्थियों व अध्यापकों को सम्मानित भी किया गया। प्राचार्य रवींद्र कुमार मनचंदा ने कहा कि हम शिक्षण को व्यवसाय के स्थान पर श्रद्धा भाव से करेंगे तो निश्चित रूप से समाज की सोच को सकारात्मक दिशा में अग्रसर करने में सहायक होंगे।

-शिक्षा सारथी डेस्क

शिक्षक दिवस : दीप से दीप जलाने की साधना

सुमन मलिक

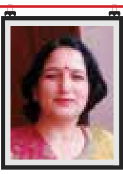

शिक्षक दिवस एक साधारण दिन नहीं, यह दिन है आभार का, यह दिन है स्मरण का, यह दिन है उन दीयों को प्रणाम करने का जो खुद जलकर हमें रोशनी देते हैं। 5 सितम्बर को हम सब मिलकर शिक्षक दिवस मनाते हैं। यह दिन हमें महान दार्शनिक, विद्वान और राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की याद दिलाता है। जब उनके शिष्यों ने उनके जन्मदिन को मनाने की इच्छा जताई, तो उन्होंने मुस्कुराकर कहा मेरे जन्मदिन को शिक्षक दिवस के रूप में मनाओ। देखिए, कितनी विनम्रता, कितनी महानता! व्यक्तिगत सम्मान से ऊपर उठकर उन्होंने पूरे शिक्षक समाज को सम्मान का पात्र बना दिया।

शिक्षक, वह दीप है जो अंधकार में भी मार्ग दिखाता है। वह किसान है जो बीज बोता है, धैर्यपूर्वक उनकी देखभाल करता है और आने वाले समय में वही बीज वटवृक्ष बनकर समाज को छाया देते हैं। शिक्षक माली है, जो हर पौधे को उसकी प्रकृति के अनुसार सींचता है। कोई बच्चा तेजस्वी है, तो कोई मौन। कोई उछलता है, तो कोई संकोच में रहता है। पर शिक्षक सबको समझता है, सबको सँभालता है।

शिक्षक दिवस केवल एक उत्सव नहीं, यह भावनाओं का उत्सव है। यह वह दिन है जब विद्यार्थी अपने गुरु को नमन करते हैं और मन ही मन स्वीकार करते हैं कि आज हम जो भी हैं, उसमें हमारे शिक्षक का योगदान है। सच ही तो है, हमारी सफलता की नींव शिक्षक की मेहनत पर टिकी है।

आज भी हमारे मन में बचपन की वे छवियाँ जीवित हैं- कक्षा की पहली पंक्ति में बैठना, ब्लैकबोर्ड पर अक्षर उकेरते हुए शिक्षक की आवाज़ सुनना, गलती करने पर डाँट मिलना और सही उत्तर देने पर मुस्कान से भरा आशीर्वाद पाना। ये सब स्मृतियाँ केवल यादें नहीं, बल्कि जीवन की थाती हैं।

भारतीय संस्कृति ने तो गुरु को ईश्वर से भी ऊँचा माना है। गुरु ही विद्यार्थी के भविष्य को गढ़ता है। वह उसमें छिपे हीरे को पहचान कर उसे तराशता है। उसकी हर बात, हर संकेत, हर व्यवहार विद्यार्थी की आत्मा पर अमिट छाप छोड़ता है।

शिक्षक दिवस हमें यह भी सोचने पर विवश करता है कि आज जब डिजिटल युग में ज्ञान के असंख्य साधन हैं, तब भी शिक्षक की आवश्यकता क्यों है? इसका उत्तर है क्योंकि ज्ञान तो मशीनें भी दे सकती हैं, पर मूल्य केवल शिक्षक ही दे सकता है। किताबें तथ्य बता सकती हैं, पर जीवन की दिशा शिक्षक ही दिखाता है। इंटरनेट जानकारी दे सकता है, पर संवेदनाएँ केवल शिक्षक जगा सकता है।

आज समाज बच्चों पर केवल अंकों का दबाव डाल रहा है। हर माँ-बाप चाहते हैं कि उनका बच्चा पहले स्थान पर आए। लेकिन एक सच्चा शिक्षक जानता है कि जीवन केवल अंक नहीं है, जीवन संवेदना है, साहस है, सृजन है। वह बच्चों को केवल सफल नहीं, बल्कि सार्थक बनाता है।

शिक्षक और विद्यार्थी का संबंध सिर्फ कक्षा तक सीमित नहीं होता। यह हृदय से हृदय का संबंध होता है। हम सब अपने जीवन में चाहे जहाँ पहुँच जाएँ, पर एक-एक शिक्षक की यादें हमारे भीतर जीवित रहती हैं। कभी उनकी डाँट प्रेरणा बन जाती है, तो कभी उनकी मुस्कान संबल। यही संबंध गुरुशिष्य परंपरा की आत्मा है।

आज का शिक्षक अनेक चुनौतियों के बीच खड़ा है। उसे तकनीकी युग में बच्चों को सही और गलत की पहचान करानी है। उसे प्रतिस्पर्धा के बोझ तले दबे बच्चों को आत्मविश्वास देना है। उसे समाज की बदलती अपेक्षाओं के बीच मूल्यों की मशाल जलाए रखनी है। और यह कोई साधारण कार्य नहीं, यह साधना है। यह साधना ही शिक्षक को ईश्वर का स्वरूप बना देती है।

शिक्षक दिवस हमें यह भी सिखाता है कि माता-पिता और शिक्षक का सहयोग मिलकर ही बच्चे का व्यक्तित्व गढ़ता है। माता-पिता जीवन के पहले शिक्षक होते हैं और विद्यालय का गुरु उनकी शिक्षा को दिशा देता है। ये दोनों मिलकर ही बच्चे को पूर्णता की ओर ले जाते हैं।

इसलिए, जब हम शिक्षक दिवस मनाते हैं तो हमें यह संकल्प लेना होता है कि हम अपने शिक्षकों का आदर केवल एक दिन नहीं, बल्कि हर दिन करेंगे। हम उनकी शिक्षा को जीवन में उतारेंगे। हम शिक्षा को केवल नौकरी का साधन नहीं, बल्कि जीवन का प्रकाश मानेंगे।

शिक्षक दिवस का वास्तविक संदेश यही है- दीप से दीप जलता रहे, ज्ञान से जीवन सँवरता रहे और गुरु का आशीष हमारे मार्ग को आलोकित करता रहे।

आज हम सब अपने जीवन के हर उन शिक्षकों को नमन करें जिन्होंने हमें गढ़ा, जिन्होंने हमारे भीतर विश्वास जगाया और जिन्होंने हमें यह सिखाया कि जीवन केवल जीना नहीं, बल्कि सार्थक बनाना है।

गणित शिक्षिका
राजकीय उच्च विद्यालय, आहुलाना
जिला- सोनीपत, हरियाणा

हरियाणा की शिक्षा व्यवस्था को मिला वैश्विक मंच पर सम्मान

शिक्षा मंत्री महीपाल ढांडा ने पेरिस में किया राज्य का प्रतिनिधित्व

हरियाणा के शिक्षा मंत्री श्री महीपाल ढांडा ने यूनेस्को (UNESCO) के आमंत्रण पर पेरिस (फ्रांस) में 1 से 5 सितंबर तक आयोजित यूनेस्को डिजिटल लर्निंग वीक-2025 में भाग लिया । यह प्रतिष्ठित वैश्विक आयोजन शिक्षा के भविष्य, डिजिटल लर्निंग, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और नवीनतम तकनीकों पर केंद्रित रहा, जिसमें अन्तरराष्ट्रीय संगठन, नीति निर्माता, शिक्षा विशेषज्ञ और तकनीकी विद्वान शामिल हुए ।

इस मौके पर शिक्षा मंत्री ने विभिन्न देशों के शिक्षा मंत्रियों और प्रतिनिधियों के साथ विचार-विमर्श किया। इस वैश्विक मंच पर उन्होंने विशेषज्ञों और नीति-निर्माताओं के साथ विमर्श के दौरान शिक्षा के भविष्य को लेकर अनेक महत्त्वपूर्ण विचार साझा किये। उन्होंने बताया कि यह अनुभव काफी उपयोगी रहा, इससे हमारे इस संकल्प को और मज़बूती मिली कि हम प्रदेश में शिक्षा को और सशक्त, आधुनिक व सर्वसमावेशी बनायें।

उन्होंने हरियाणा राज्य द्वारा भारत की शिक्षा नीति 2020 के विज़न के अनुरूप वैश्विक स्तर पर शिक्षा क्षेत्र में आ रहे बदलाव में विचार-विमर्श किया। उन्होंने बताया कि हरियाणा में शिक्षा नीति को इसी सत्र से लागू किया जा रहा है, जो प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के डिजिटल भारत के विज़न को साकार करने में अहम भूमिका निभाएगा।

उन्होंने बताया कि यह इस बात को प्रमाणित करता है कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी और हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी के दूरदर्शी नेतृत्व में राज्य की शिक्षा व्यवस्था निरंतर प्रगति के नए आयाम छू रही है और वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बना रही है।

उन्होंने बताया कि हरियाणा ने विद्यालयों में स्मार्ट क्लासरूम, ई-लर्निंग कंटेंट, डिजिटल लैब्स, शिक्षकों के प्रशिक्षण कार्यक्रम और विद्यार्थियों के लिए तकनीक आधारित सीखने के अवसर उपलब्ध कराकर शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव किए हैं।

श्री ढांडा ने कहा कि हरियाणा सरकार शिक्षा को सिर्फ़ पारंपरिक ढाँचे तक सीमित नहीं रख रही, बल्कि नई तकनीकों को अपनाकर विद्यार्थियों को भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार कर रही है। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि हरियाणा सरकार ने डिजिटल शिक्षा में समान अवसर सुनिश्चित करने के लिए विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों और वंचित वर्ग के बच्चों को ध्यान में रखकर अनेक नवाचार लागू किए हैं।

यूनेस्को द्वारा हरियाणा की इन पहलों को मान्यता देना राज्य के लिए गर्व की बात है। इससे न केवल हरियाणा का वैश्विक स्तर पर गौरव बढ़ा है, बल्कि इससे शिक्षा जगत के अन्य हितधारकों के बीच भी राज्य की साख मज़बूत हुई है।

यूनेस्को डिजिटल लर्निंग वीक में हरियाणा द्वारा प्रस्तुत मॉडल की विशेषता यह रही कि कैसे राज्य ने सूचना प्रौद्योगिकी (IT) और सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (ICT) का उपयोग कर डिजिटल अंतराल (Digital Divide) को कम करने और सरकारी व निजी स्कूलों के बीच की खाई को घटाने पर फ़ोकस किया।

शिक्षा मंत्री के साथ शिष्टमंडल में हरियाणा शिक्षा विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव श्री विनीत गर्ग व अन्य अधिकारी मौजूद थे।

- शिक्षा सारथी डेस्क

धरती को हरा-भरा बनाने के लिए सार्थक प्रयास

डॉ. ओमप्रकाश कादयान

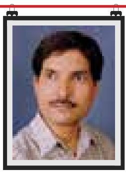

पिछले कुछ वर्षों में मोबाइल, टीवी, फिल्मों, बेहूदे गानों व स्वार्थवश बदलते परिवेश के कारण हम प्रकृति, संस्कार और संस्कृति से कटते जा रहे हैं। यह परिवर्तन समाज और राष्ट्र के लिए घातक है। अब सँभलने, चेतने और सोचने का समय आ गया है। यदि हम अपने गाँव, शहर, राज्य या राष्ट्र में कोई कलात्मक, संस्कारात्मक, सामाजिक, राजनीतिक, आध्यात्मिक या पर्यावरणीय सकारात्मक परिवर्तन लाना चाहते हैं तो सबसे बढ़िया और असरदार तरीका है कि हम युवा पीढ़ी के हृदय को बदलें। और इससे भी असरदार तरीका है कि बच्चों व किशोरों में आंतरिक परिवर्तन लाएँ, क्योंकि यदि एक बार बच्चों या किशोरों के मन में कोई अच्छी बात घर कर गई तो उसका असर उम्र भर रहता है। भविष्य में देश की बागडोर आज के बच्चों के हाथों में ही होगी, इसलिए हमें बच्चों को संस्कारवान, राष्ट्र भक्त और प्रकृति-प्रेमी बनाना होगा।

यदि हम बच्चों को केवल पुस्तकों व भाषणों के माध्यम से कुछ सिखाने का प्रयास करते हैं तो उसका असर बहुत गहरा नहीं होता, जितना कि व्यावहारिक

अनुभव से होता है। हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग पिछले कुछ वर्षों से इस विषय में बेहतरीन प्रयास कर रहा है। शिक्षा विभाग के कुछ अधिकारियों का प्रयास है कि बच्चे किताबी ज्ञान के अलावा और भी बहुत कुछ प्रत्यक्ष रूप से सीखें। इसके लिए विभाग विद्यार्थियों को फाइन आर्ट वर्कशॉप, सांस्कृतिक उत्सव, कला-उत्सव, एडवेंचर टूर, अनेक प्रतियोगिताओं आदि के माध्यम से राष्ट्रहितकारी, सहयोगी, ऊर्जावान व संस्कारवान बनाने का सार्थक प्रयास कर रहा है।

इसी संदर्भ में 'यूथ एंड इको क्लब' अभियान के माध्यम से शिक्षा विभाग विद्यार्थियों के मन में झाँकते हुए विभिन्न गतिविधियों से उन्हें प्रकृति, संस्कृति और संस्कार से जोड़कर हरियाली के प्रहरी बनाने जा रहा है। इसी विषय पर विस्तार से अध्ययन, विचार-विमर्श, आपसी

संवाद और सकारात्मक चिंतन करने तथा गतिविधियों को विस्तृत फलक देने के उद्देश्य से हरियाणा स्कूल शिक्षा परियोजना परिषद् व समग्र शिक्षा के द्वारा कुरुक्षेत्र की जयराम विद्यापीठ में 23 से 25 जुलाई, 2025 तक तीन दिवसीय राज्य स्तरीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें हर जिले से एक एपीसी, एक एलिमेंट्री कोऑर्डिनेटर और एक सैकेंडरी कोऑर्डिनेटर ने भाग लिया। यानी पूरे हरियाणा से 22 एपीसी तथा 44 कोऑर्डिनेटर उत्साहपूर्वक शामिल हुए और 'यूथ एंड इकोक्लब' के स्वरूप, गतिविधियों व जिम्मेदारियों पर चर्चा की। 8-8 और 10-10 के समूह बनाकर विमर्श हुआ।

कार्यशाला का उद्घाटन 'यूथ एंड इको क्लब' के कंसल्टेंट डॉ. धीरज कौशिक, डॉ. रामकुमार और डीपीसी संतोष चौहान ने दीप प्रज्वलित कर किया। इस अवसर पर नोडल अधिकारी एपीसी राजेश कुमार भारद्वाज, करनाल के कोऑर्डिनेटर श्रवण सिंह, प्राचार्य राकेश कुमार, रामराज कौशिक, विजेन्द्र धनखड़, नरेंद्र बल्हारा, सतबीर कौशिक, प्रदीप यादव, डॉ. इन्द्रसेन, सुखदेव ढिल्लों सहित हरियाणा भर केडीपीसी और कोऑर्डिनेटर मौजूद रहे।

संतोष चौहान ने सम्बोधन में कहा कि पर्यावरण-संरक्षण आज विश्व का सर्वाधिक ज्वलंत मुद्दा है, जिसे लेकर सभी देश चिंतित हैं। इसलिए इसे गंभीरता से लेना चाहिए। शिक्षा विभाग इस मुद्दे को प्रमुखता से लेते हुए 'यूथ एंड इको क्लब' अभियान के माध्यम से शिक्षकों व विद्यार्थियों के जरिये आवश्यक कदम उठाकर पर्यावरण संरक्षण में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए तैयार है।

प्राचार्य डॉ. रामकुमार ने कहा कि विद्यार्थी कुदरत

शिक्षा और प्रकृति का संगम

नई शिक्षा नीति-2020 बच्चों को केवल किताबों तक बाँधने के विरुद्ध है। उसमें कहा गया है कि शिक्षा अनुभवों और गतिविधियों से जुड़ी होनी चाहिए। विद्यालयों में जब बच्चे 'एक पेड़ माँ के नाम' जैसे अभियानों में भाग लेते हैं, तो वे केवल पौधा नहीं लगाते, बल्कि एक मूल्य भी रोपित करते हैं। कल्पना कीजिए, कोई बच्चा अपनी माँ के नाम पर पेड़ लगाता है, तो वह उसे केवल पौधा न मानकर जीवन का हिस्सा समझेगा। यह वही जीवन कौशल है जिसकी अपेक्षा एनईपी करती है। शिक्षा का अर्थ केवल ज्ञान देना नहीं, बल्कि जीवन जीना सिखाना है। इस प्रकार, यह पहल शिक्षा और प्रकृति का सुंदर संगम है, जो बच्चों में संवेदनशीलता और जिम्मेदारी की भावना जागृत करती है।

डॉ. धीरज कौशिक
कंसल्टेंट
हरियाणा स्कूल शिक्षा परियोजना परिषद, पंचकूला

हरियाली ही जीवन है

आज पूरी दुनिया जलवायु संकट से जूझ रही है। तापमान निरंतर बढ़ रहा है, जलस्रोत सूख रहे हैं और प्रदूषण का स्तर भयावह हो चुका है। यह सब वृक्षों के अंधाधुंध कटाव का परिणाम है। ऐसे समय में 'एक पेड़ माँ के नाम' जैसे प्रयास आशा की किरण हैं। यह केवल औपचारिक वृक्षारोपण न होकर जीवन रक्षा का अभियान है। यदि हर परिवार, हर गाँव और हर मोहल्ला इस सोच को अपनाए, तो आने वाली पीढ़ियों को हरित और स्वच्छ वातावरण मिल सकेगा। माँ के नाम पर लगाया गया एक पेड़ केवल स्मृति ही नहीं होगा, बल्कि भविष्य की साँसों की सुरक्षा भी बनेगा। यही धरती और जीवन को बचाने का वास्तविक मार्ग है।

डॉ. इन्दर सैन
जिला समन्वयक, सिरसा

के सौंदर्य को बचाने, हरियाली बढ़ाने, पौधारोपण और पौधों के संरक्षण में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। निस्संदेह विद्यार्थी पर्यावरण में बेहतरीन बदलाव ला सकते हैं क्योंकि वे पढ़ने की अपेक्षा देखकर जल्दी सीखते हैं, इसलिए इस योजना के तहत उन्हें अनेक गतिविधियों से जोड़ा जा रहा है।

हरियाणा विद्यालय शिक्षा परियोजना परिषद्, पंचकूला के कंसल्टेंट व 'यूथ एंड इको क्लब' इंचार्ज डॉ. धीरज कौशिक ने इस तीन दिवसीय कार्यशाला के उद्देश्य के बारे में बताया कि 'यूथ एंड इको क्लब' एक मिशन है। इस का उद्देश्य केवल पौधारोपण करना नहीं है बल्कि हरियाणा के सभी विद्यालयों के सभी बच्चों को प्रकृति से जोड़कर वातावरण, जल, जंगल और जमीन को सुरक्षित व संरक्षित रखना सिखाना है।

उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों को ऐसा बनाया जाएगा कि वे समय-समय पर स्वयं पौधारोपण करें, उन्हें संरक्षित करें और बड़ा करें। विद्यार्थी पर्यावरण की चिंता करते हुए प्लास्टिक का कम से कम प्रयोग करें तथा बिजली व इंधन बचाना सीखें। इस वर्कशॉप में आए 66 कोऑर्डिनेटर और एपीसी को यह जिम्मेदारी दी जा रही है कि वे अपने-अपने ज़िलों में जाकर प्रत्येक विद्यालय के प्रत्येक बच्चे में ऐसा जुनून पैदा करें कि वह प्रकृति-संरक्षण का प्रहरी बन सके और दूसरों को भी इस अभियान से जोड़े। 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान की सार्थकता को सिद्ध करते हुए अपने गाँव, शहर, राज्य और राष्ट्र को हरा-भरा होते देखने का सपना पूरा हो।

उपजिला शिक्षा अधिकारी बसंत ढिल्लों ने कहा कि आप प्रकृति की शरण में जाइए, उसे मन से निहारिए, आपके सारे तनाव दूर हो जाएँगे। उन्होंने कहा कि हम

पर्यावरणः मातृऋण चुकाने का माध्यम

माँ और प्रकृति दोनों में अद्भुत समानता है। वे कभी अपने लिए कुछ नहीं माँगतीं, केवल देती ही रहती हैं। किंतु विडम्बना यह है कि हमने न माँ का ऋण चुकाया और न ही प्रकृति का। 'एक पेड़ माँ के नाम' इस कर्ज को उतारने का छोटा किंतु सार्थक प्रयास है। जब कोई बेटा या बेटी माँ की याद में पेड़ लगाता है, तो वह केवल पर्यावरण को बचाने का कार्य नहीं करता, बल्कि अपने संस्कारों को भी जीवित करता है। यह अभियान हमारी परंपरा से जुड़ता है, जहाँ वृक्षों की पूजा कर उन्हें परिवार का हिस्सा माना जाता था। सच यही है कि माँ का प्यार और प्रकृति की छाया-दोनों ही जीवन की सबसे अमूल्य संपत्ति हैं।

सुखदेव सिंह
जिला समन्वयक, सिरसा

सामुदायिक भागीदारी की आवश्यकता

किसी भी अभियान की सफलता जनभागीदारी पर निर्भर करती है। 'एक पेड़ माँ के नाम' तभी प्रभावी होगा, जब यह विद्यालयों की सीमाओं से निकलकर पूरे समाज का उत्सव बने। पंचायतें, महिला समूह, किसान, युवा संगठन और हर नागरिक इसकी जिम्मेदारी लें। कल्पना कीजिए- जब गाँव की माताएँ अपने बच्चों के साथ मिलकर पेड़ रोपेंगी और मुहल्ले के युवा उसकी देखभाल का संकल्प लेंगे, तब यह केवल अभियान नहीं रहेगा, बल्कि सामाजिक क्रांति का रूप ले लेगा। यदि गाँव की चौपाल से लेकर शहर की कॉलोनी तक हर जगह यह विचार अपनाया जाए, तो वृक्षारोपण सरकारी आदेश नहीं, बल्कि जन-उत्सव बन जाएगा। यही सामुदायिक सहयोग आने वाली पीढ़ियों को हरियाली और स्वच्छ हवा का उपहार देगा।

नरेन्द्र बल्हारा
जिला समन्वयक, पंचकूला

एक संकल्प, अनगिनत लाभ

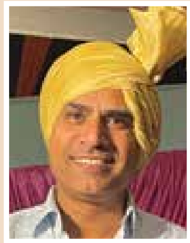

एक पेड़ केवल छाया नहीं देता, वह जल को बचाता है, मृदा को उपजाऊ बनाता है, पशु-पक्षियों का आश्रय स्थल बनता है और इंसानों को प्राण वायु प्रदान करता है। यदि हम हर वर्ष केवल एक पेड़ भी लगाएँ और उसकी देखभाल करें, तो यह न केवल पर्यावरण की रक्षा होगी, बल्कि राष्ट्र निर्माण में भी योगदान होगा। 'एक पेड़ माँ के नाम' मात्र वृक्षारोपण नहीं, बल्कि मातृ ऋण चुकाने का संकल्प है। जब यह संकल्प करोड़ों लोगों का साझा प्रयास बन जाएगा, तब भारत हरियाली की नई परिभाषा गढ़ेगा। यह अभियान हमें सिखाता है कि छोटा सा व्यक्तिगत प्रयास भी सामूहिक शक्ति में बदलकर देश की तस्वीर बदल सकता है। यही है हरित भविष्य की दिशा।

विजेंद्र सिंह धनखड़
जिला समन्वयक, पंचकूला

पर्यावरण संरक्षण का संकल्प

कुरुक्षेत्र की इस पावन भूमि पर, जहाँ हजारों वर्ष पहले धर्म और अधर्म के बीच महायुद्ध हुआ था, अब एक नया धर्मयुद्ध प्रारंभ हुआ है- पर्यावरण संरक्षण का। तीन दिवसीय कार्यशाला में प्रतिनिधियों को यूथ और इको क्लब की संरचना व गतिविधियों से परिचित कराया गया। निर्णय लिया गया कि कक्षा 1 से 12 तक के सभी विद्यार्थियों को क्लब से जोड़ा जाएगा और उन्हें पौधारोपण, प्रकृति अध्ययन यात्राओं, प्रतियोगिताओं और शोध कार्यों में भागीदारी दिलाई जाएगी। बच्चों को केवल पौधे लगाने तक सीमित न रहकर, उसे जीवित रखने की जिम्मेदारी भी निभानी होगी। यही जिम्मेदारी आगे चलकर जीवनभर का संस्कार बनेगी। समूह-चर्चा, प्रेज़ेंटेशन और अनुभवों के आदान प्रदान से यह स्पष्ट किया गया कि आज सबसे बड़ा धर्मयुद्ध प्रदूषण और असंतुलन के विरुद्ध है।

संदीप कुमार
ललित कला प्राध्यापक
गवर्नमेंट मॉडल संस्कृति सीनियर सेकेंडरी स्कूल, नलवा, हिसार

मोबाइल पर सोशल मीडिया में तो बहुत पेड़ लगाते हैं, लेकिन कुछ पेड़ वास्तविकता में भी लगाएँ।

डॉ. कौशिक ने कहा कि प्रत्येक विद्यालय में 'यूथ एंड इको क्लब' का गठन करके ज्यादा से ज्यादा विद्यार्थियों को इस अभियान से जोड़ा जा रहा है। प्रत्येक विद्यालय में क्लब का एक इंचार्ज बनाया गया है तथा छठी से बारहवीं तक की प्रत्येक कक्षा के दस विद्यार्थी इसके सदस्य हैं।

इस क्लब के माध्यम से शिक्षा विभाग समय-समय पर बच्चों के लिए प्रतियोगिताएँ आयोजित करेगा। ये प्रतियोगिताएँ जहाँ बच्चों की कला व सोच को निखारेंगी, वहीं उनमें पर्यावरण संरक्षण की भावना भी जगाएँगी। डॉ. रामकुमार ने बताया कि इससे बच्चे स्वस्थ रहेंगे, संस्कारवान बनेंगे और अपनी संस्कृति व अपनी जमीन से जुड़ेंगे।

प्रतियोगिताओं के अलावा बड़ी योजना यह भी है कि बच्चों को सीधे तौर पर प्रकृति से जोड़ने के लिए उन्हें 'नेचर स्टडी' हेतु पहाड़ों, ऐतिहासिक-कलात्मक पर्यटन स्थलों, जंगलों, मरुस्थलीय इलाकों और समुद्री तटीय क्षेत्रों की यात्रा करवाई जाएगी। वहाँ वे शोध करेंगे, लेख लिखेंगे और प्राकृतिक जीवन को आत्मसात् करेंगे। इस प्रकार उनमें प्रकृति, पेड़-पौधों, जड़ी-बूटियों, वनस्पतियों, नदियों, झरनों और जीव-जंतुओं से विशेष लगाव पैदा होगा, जो पर्यावरण संरक्षण की दिशा में अमूल्य योगदान देगा।

डॉ. धीरज कौशिक ने कहा कि विद्यार्थियों को बताया जाएगा कि पेड़ हैं तो साँसें हैं, हरियाली है तो खुशहाली है, पानी है तो जीवन है, और पर्यावरण साफ-सुथरा है तो स्वास्थ्य उत्तम है। उन्हें यह भी सिखाया जाएगा कि प्लास्टिक का उपयोग, कीटनाशकों का अत्यधिक छिड़काव, प्रदूषण, कटते पेड़, पिघलते ग्लेशियर, बढ़ता तापमान आदि सभी जीव-जंतुओं और मनुष्यों के लिए घातक हैं। उन्होंने चेतावनी दी कि जैसे डायनासोर धरती से लुप्त हो गए, वैसे ही यदि इंसान ने प्रकृति का संतुलन नहीं साधा तो परिणाम विनाशकारी हो सकते हैं।

तीन दिवसीय कार्यशाला के दौरान विशेषज्ञों ने यूथ एंड इको क्लब कॉर्नर, प्रकृति अध्ययन शिविर व यात्राओं की सुरक्षा, एक पेड़ माँ के नाम, साहसिक कार्यक्रम और प्रकृति अध्ययन, तथा नई शिक्षा नीति के संदर्भ में प्रकृति अध्ययन का सामंजस्य जैसे विषयों पर विस्तार से चर्चा की।

कार्यशाला के समापन अवसर पर डीपीसी संतोष चौहान, डॉ. धीरज कौशिक और डॉ. रामकुमार ने सभी 22 एपीसी व 44 कोऑर्डिनेटर को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया। उन्होंने यह भी सलाह दी कि जामुन, आम, शहतूत, आँवला, बेल, अर्जुन, नीम, बड़, पीपल, पलखन, गुल्लर, गुलमोहर, शीशम आदि के वृक्षों के नीचे बरसात के तुरंत बाद उगने वाले पौधों को वहाँ से निकालकर नई जगह लगाया जाएगा कि उनका सही उपयोग हो और धरती पर हरियाली बढ़े। इसी तरह फल खाने के बाद गुठली या बीज को डस्टबिन में फेंकने के बजाय उन्हें मिट्टी में दबा देना चाहिए ताकि उनसे नए पौधे उग सकें।

यह कार्यशाला प्रतिभागियों के लिए अत्यंत उपयोगी और प्रेरणादायी रही। धर्मनगरी कुरुक्षेत्र में आयोजित इस कार्यक्रम ने सभी को यह अनुभव कराया कि जैसे महाभारत का धर्मयुद्ध यहीं से लड़ा गया था, वैसे ही अब शिक्षा विभाग भी 'यूथ एंड इको क्लब' के माध्यम से पर्यावरण असंतुलन के विरुद्ध धर्मयुद्ध छेड़ रहा है।

यह युद्ध होगा फैलते प्लास्टिक के दुष्प्रभावों के खिलाफ, वृक्षों की अंधाधुंध कटाई के खिलाफ और उन विचारों के खिलाफ, जो प्रकृति को हानि पहुँचाते हैं। विद्यार्थियों के माध्यम से समाज का हृदय परिवर्तन कर उन्हें प्रकृति-प्रेमी और पर्यावरण-संरक्षक बनाया जाएगा। निस्संदेह यह अभियान अपने लक्ष्य में सफल होगा और धरती को हरा-भरा, सुंदर और जीवनदायी बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

वरिष्ठ साहित्यकार व सेवानिवृत्त शिक्षक
विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा

प्रतियोगिता में दिखी विद्यार्थियों की प्रतिभा

राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस के अवसर पर करनाल में आयोजित किया हुआ विशेष कार्यक्रम

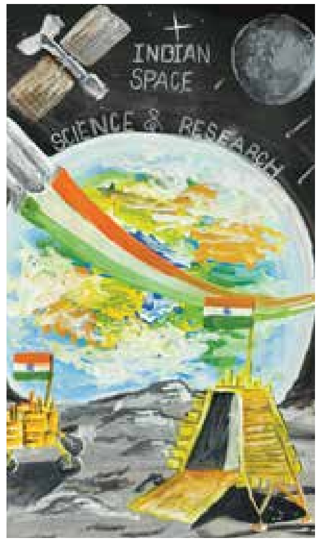

प्रदीप मलिक

राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस का आयोजन मंगलसेन सभागार, करनाल में किया गया। कार्यक्रम में भारत सरकार के केंद्रीय कैबिनेट मंत्री श्री मनोहर लाल मुख्य अतिथि और हरियाणा सरकार के शिक्षा मंत्री श्री महीपाल ढांडा विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। कार्यक्रम का आयोजन विज्ञान और तकनीकी निदेशालय, हरियाणा द्वारा किया गया।

विज्ञान और तकनीकी विभाग के एसीएस श्री विनीत गर्ग (आईएएस) ने सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस के बारे में विस्तृत जानकारी दी। कार्यक्रम में इसरो की रॉकेट वूमेन एवं सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. ऋतु और वैज्ञानिक विद्युत कुमार भद्र ने बताया कि राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस पर इस वर्ष की थीम आर्यभट्ट से गगनयान और प्राचीन ज्ञान से अनंत संभावनाओं तक रखी गई है।

उन्होंने आर्यभट्ट मिशन से लेकर चंद्रयान-3 की सफलता, चुनौतियों और उपलब्धियों के बारे में विस्तार से जानकारी दी तथा इसरो में चल रहे विभिन्न अध्ययन कार्यों से बाल वैज्ञानिकों को अवगत करवाया। उन्होंने बताया कि इसरो ने कम खर्च में अंतरिक्ष के विभिन्न क्षेत्रों में सफलता प्राप्त की है, जो स्वयं में एक अद्भुत उपलब्धि है। इसके लिए देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने इसरो को बधाई भी दी है। आज भारत अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में नई उपलब्धियाँ हासिल करते हुए वैश्विक स्तर पर परचम लहरा रहा है, जो हम सभी के लिए गर्व की अनुभूति है।

राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस समारोह में मुख्य अतिथि, केंद्रीय मंत्री श्री मनोहर लाल ने कहा कि भारत प्राचीन समय से ही खगोल-विज्ञान और गौरवशाली कार्यों में अग्रणी रहा है। हमारे महान आर्यभट्ट ने विश्व को शून्य के बारे में बताया। भारत के इतिहास में प्राचीन काल की घटनाओं पर आधारित अनेक गाथाएँ पाई जाती हैं। हमारे ग्रंथों में भी खगोलीय ज्ञान के आधार पर अनेक तथ्य मौजूद हैं, जो हमें पूर्णिमा और अमावस्या से संबंधित जानकारी देते हैं।

उन्होंने बताया कि आज भारत के वैज्ञानिकों की दूरदर्शिता और कठिन परिश्रम का परिणाम है कि भारत अंतरिक्ष की दुनिया में अपनी सफलताओं और उपलब्धियों के लिए अग्रदूत राष्ट्र बन चुका है। हर भारतीय को इस बात का गर्व है कि भारत ऐसा पहला राष्ट्र है जिसने अंतरिक्ष में अपने अभियान की सफलता को सिद्ध किया है।

विशिष्ट अतिथि, हरियाणा के शिक्षा मंत्री श्री महीपाल ढांडा ने बताया कि हमारे स्कूली विद्यार्थियों ने विभिन्न प्रतियोगिताओं के माध्यम से अंतरिक्ष अन्वेषण और मिशन, अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी और नवाचार, अंतरिक्ष विज्ञान और अनुसंधान, अंतरिक्ष और समाज, अंतरिक्ष और पर्यावरण आदि विषयों पर अपने विचार प्रस्तुत किए। विद्यार्थियों ने पोस्टर बनाने, निबंध लेखन और सेमिनार में बढ़-चढ़कर भाग लिया।

पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन करनाल और पानीपत शिक्षा विभाग के संयुक्त सहयोग से किया गया। इसमें बच्चों ने अंतरिक्ष में भारत की बढ़ती उपलब्धियों का चित्रण बड़ी बारीकी से किया, जिसमें चंद्रयान की सफल लैंडिंग से लेकर मिशन चंद्रमा तक को दिखाया गया। इन्हीं छात्रों में से भविष्य के वैज्ञानिक तैयार होंगे, जो इसरो जैसे संगठनों के साथ मिलकर देश के लिए कार्य करेंगे।

शिक्षा मंत्री ने कहा कि करनाल की बेटी कल्पना चावला ने अंतरिक्ष में उड़ान भरकर देश का नाम रोशन किया। आज हमें कल्पना चावला के जीवन से प्रेरणा लेने की आवश्यकता है, ताकि सैकड़ों नई कल्पना चावला देश के लिए कार्य करें।

कार्यक्रम में श्री राजीव रत्न (आईएएस), निदेशक विज्ञान एवं तकनीकी विभाग, हरियाणा ने सभी का आभार व्यक्त किया। मुख्य अतिथि श्री मनोहर लाल और विशिष्ट अतिथि श्री महीपाल ढांडा ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया।

प्रथम पुरस्कार : 5,000 रुपये एवं प्रशस्ति-पत्र
द्वितीय पुरस्कार : 3,000 रुपये एवं प्रशस्ति-पत्र
तृतीय पुरस्कार : 2,000 रुपये एवं प्रशस्ति-पत्र

इस दौरान लगाई गई प्रदर्शनी में इसरो द्वारा प्रक्षेपित

सैटेलाइट, पीएसएलवी, एआई और ऑटोमेटिक ड्रोन के साथ-साथ बच्चों द्वारा बनाई गई पेंटिंग और पोस्टर भी प्रदर्शित किए गए।

इस अवसर पर उपायुक्त करनाल श्री उत्तम सिंह, पुलिस अधीक्षक करनाल श्री गंगाराम पूनिया, जिला शिक्षा अधिकारी करनाल श्रीमती सुदेश ठकराल, जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी करनाल श्री रोहताश वर्मा, जिला शिक्षा अधिकारी पानीपत श्री राकेश कुमार, जिला विज्ञान विशेषज्ञ पानीपत संदीप कुमार, जिला विज्ञान विशेषज्ञ करनाल दीपक वर्मा सहित विभिन्न स्कूलों के प्रधानाचार्य, शिक्षक और विद्यार्थी उपस्थित रहे।

प्रतियोगिताओं के परिणाम-

पानीपत जिला के विजेता प्रतिभागी

पोस्टर प्रतियोगिता

1. आर्यन, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, बड़ौली, प्रथम पुरस्कार
2. कहक्षा, राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, शिव नगर पानीपत, द्वितीय पुरस्कार
3. शगुन, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, बड़ौली, तृतीय पुरस्कार

निबंध लेखन प्रतियोगिता

1. सानिया, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, तहसील कैंप पानीपत, प्रथम पुरस्कार
2. स्तुति, डॉ. एमकेके आर्य स्कूल, मॉडल टाउन पानीपत, द्वितीय पुरस्कार
3. रुख्सार, राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, इसराना, तृतीय पुरस्कार

सेमिनार

1. मानवी, राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, बापौली, प्रथम पुरस्कार

करनाल जिला के विजेता प्रतिभागी

पोस्टर प्रतियोगिता

1. गुरनूर कौर, ओपीएस विद्या मंदिर, सेक्टर 13 करनाल, प्रथम पुरस्कार
2. कुनाल सिंह, दयाल सिंह पब्लिक स्कूल, सेक्टर 7 करनाल ,द्वितीय पुरस्कार
3. पीयूष, पीएम श्री राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, करनाल, तृतीय पुरस्कार

निबंध लेखन प्रतियोगिता

1. कशिश, राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, निसिंग, प्रथम पुरस्कार
2. गुंजन, राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, तरावड़ी, द्वितीय पुरस्कार
3. हंशिका बंसल, प्रताप पब्लिक स्कूल, सेक्टर- 6 करनाल, तृतीय पुरस्कार

सेमिनार

1. अश्लेषा, राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, घरौंडा, प्रथम पुरस्कार

पीजीटी ललित कला
राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक
विद्यालय, इसराना, पानीपत

राष्ट्रपति से मिली राष्ट्र-रक्षा की प्रेरणा

चौधरीवास स्थित विद्या निकेतन पब्लिक स्कूल के नन्हे-मुन्ने बच्चों ने इस वर्ष रक्षाबंधन का पर्व कुछ अलग ही ढंग से मनाया। वे नई दिल्ली स्थित राष्ट्रपति भवन पहुँचे और माननीया राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु को राखियाँ बाँधकर न केवल अपने स्नेह का इज़हार किया, बल्कि राष्ट्र के साथ अटूट नाते का भी पावन संकल्प लिया।

इस अवसर पर राष्ट्रपति जी ने विद्यार्थियों को स्नेहिल आशीर्वाद देते हुए कहा कि पर्यावरण संरक्षण ही आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। उन्होंने बच्चों को वृक्ष लगाने और उनकी देखभाल करने का प्रण दिलाया। उनके ये शब्द बच्चों के मन में गहराई तक उतर गए।

विद्यालय की प्राचार्या डॉ. गुंजन गोयल ने बताया कि विद्यालय शिक्षा को केवल अंकों और परीक्षाओं तक सीमित नहीं रखता। यहाँ बच्चों के व्यक्तित्व का ऐसा विकास होता है जिसमें ज्ञान के साथ संवेदना, जिम्मेदारी और सेवा का भाव भी शामिल है। यही कारण है कि विद्यार्थी हर उस कार्य में आगे रहते हैं, जो समाज और पर्यावरण की भलाई से जुड़ा हो।

विद्यालय प्रबंधन समिति ने राष्ट्रपति जी के अमूल्य मार्गदर्शन के लिए आभार व्यक्त किया और बच्चों को इस अनोखे अवसर पर बधाई दी। समिति ने विश्वास व्यक्त किया कि यह अनुभव बच्चों के जीवन में नई ऊर्जा और प्रेरणा का संचार करेगा।

विद्यालय के संरक्षक संजय डालमिया ने कहा कि विद्या निकेतन अपने विद्यार्थियों को केवल सफल नागरिक ही नहीं, बल्कि संवेदनशील इंसान बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने बच्चों को निरंतर आगे बढ़ने और समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने की प्रेरणा दी।

इस बार रक्षाबंधन केवल भाई-बहन के रिश्ते तक सीमित नहीं रहा। बच्चों ने राष्ट्रपति को राखी बाँधकर प्रतीकात्मक रूप से देश की रक्षा और सेवा का संकल्प लिया। यह पर्व उन्हें यह सिखा गया कि जैसे बहनें भाई की सुरक्षा की कामना करती हैं, वैसे ही धरती और राष्ट्र की रक्षा का दायित्व भी उन्हीं का है।

विद्यालय लौटते समय बच्चों के चेहरों पर उत्साह और मन में दृढ़ संकल्प झलक रहा था। यह अनुभव उनके लिए केवल एक उत्सव नहीं, बल्कि जीवन भर का प्रेरणास्रोत बन गया।

निस्संदेह, विद्या निकेतन पब्लिक स्कूल का यह अनूठा रक्षाबंधन उत्सव विद्यार्थियों, अभिभावकों और पूरे समुदाय के लिए अविस्मरणीय स्मृति बन गया। यह आयोजन हमें याद दिलाता है कि जब शिक्षा में संवेदनशीलता और मूल्यों का समावेश होता है, तभी वह सचमुच भविष्य की दिशा और राष्ट्र की दशा को बदलने का सामर्थ्य रखती है।

-शिक्षा सारथी डेस्क

हिंदी मेरा ईमान है, हिंदी मेरी पहचान है

सुरेश राणा

किसी भी देश की सच्ची पहचान उसकी भाषा होती है। यदि भाषा न हो तो समाज और राष्ट्र की कल्पना भी अधूरी रह जाएगी। भारत के लिए यह गौरव का विषय है कि उसकी पहचान हिंदी है। हिंदी हमारे जीवन-मूल्यों और संस्कारों की भाषा है। यह भारत का स्वाभिमान और गरिमा है, जिसने हमारे सांस्कृतिक वैभव, राष्ट्रीय गौरव और अस्मिता को बचाए रखने में सदैव महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

स्वतंत्रता आंदोलन के समय हिंदी ने राष्ट्रीय चेतना जगाने का कार्य किया। महात्मा गांधी ने स्पष्ट कहा था कि यदि भारत को एक राष्ट्र के रूप में एकसूत्रता में पिरोना है तो हिंदी ही हमारी राष्ट्रभाषा बन सकती है। संविधान सभा ने भी 14 सितम्बर, 1949 को देवनागरी लिपि में हिंदी को भारत की राजभाषा घोषित कर इस भाषा को राष्ट्रीय पहचान प्रदान की। नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने यह मान्यता दी थी कि प्रांतीय ईर्ष्या और द्वेष को समाप्त करने में हिंदी से बढ़कर कोई साधन नहीं हो सकता। यही कारण है कि हिंदी ने सदैव एकता और अखंडता का सूत्रधार बनकर कार्य किया है।

हिंदी की सबसे बड़ी विशेषता इसका उदार चरित्र है। यह विभिन्न बोलियों और विदेशी भाषाओं के शब्दों को आत्मसात् करती रही है। यही कारण है कि इसका साहित्य अत्यंत समृद्ध और व्यापक है। हिंदी की जड़ें गहरी हैं और इसकी शाखाएँ भारत की अनेक बोलियों से जुड़ी हुई हैं। विश्वकवि रवींद्रनाथ ठाकुर ने इसे महानदी कहा था, जिसमें अन्य भारतीय भाषाएँ सहायक धाराओं की तरह समाहित होती हैं। तुलसीदास, सूर, कबीर और मीरा जैसे संत कवियों ने हिंदी को अध्यात्म और मानवता का स्वर दिया। महात्मा गांधी ने भी इसे पवित्र भाषा कहा था, क्योंकि इसमें तुलसीदास जैसे महाकवि ने जन-जन का मार्गदर्शन किया।

हिंदी की महत्ता केवल भारत में ही नहीं, विदेशों में भी स्वीकार की गई। जॉन ग्रिलक्राइस्ट ने देवनागरी वर्णमाला को सबसे पूर्ण माना। फादर कामिल बुल्के ने कहा कि विश्व में कोई भी भाषा ऐसी नहीं है जो सरलता और अभिव्यक्ति की क्षमता में हिंदी की बराबरी कर सके। अंग्रेज़ विद्वान टॉमस का मानना था कि कश्मीर से कन्याकुमारी और बंगाल से सिंध तक यदि कोई भाषा संवाद का साधन बन सकती है तो वह हिंदी है।

आज भूमंडलीकरण और तकनीकी विकास ने दुनिया को सिमटा दिया है। इस युग में हिंदी की भूमिका और भी मज़बूत हुई है। यह अब केवल भारत की ही भाषा नहीं रह गई है, बल्कि फिजी, सूरीनाम, मॉरीशस, गुयाना और नेपाल जैसे देशों में बोली जाती है। अमेरिका, कनाडा, जर्मनी, न्यूज़ीलैंड और दक्षिण अमेरिका में प्रवासी भारतीयों के कारण हिंदी का परचम लहरा रहा है। इंटरनेट और सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में देवनागरी लिपि की सहजता ने हिंदी को विशेष लोकप्रियता दिलाई है। हिंदी फिल्मों, गीतों, टेलीविजन और सोशल मीडिया ने इसकी पहुँच को जन-जन तक पहुँचाकर इसे वैश्विक बना दिया है।

आज हिंदी रोजगार और तकनीक की भी भाषा बन चुकी है। बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अपने व्यापार के विस्तार के लिए हिंदी को अपना रही हैं। माइक्रोसॉफ्ट, गूगलऔर याहू जैसी बड़ी कंपनियाँ हिंदी सामग्री को प्रोत्साहन दे रही हैं, क्योंकि यह भाषा विश्व का सबसे बड़ा उपभोक्ता बाजार प्रदान करती है। हिंदी के माध्यम से ही कंपनियाँ भारत और अन्य हिंदी भाषी देशों के करोड़ों लोगों तक पहुँच बना पाती हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में भी हिंदी ने नई ऊँचाइयाँ छुई हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 ने छठी कक्षा तक मातृभाषा में शिक्षा देने का प्रावधान किया है। आज मेडिकल, इंजीनियरिंग, प्रबंधन और कानून तक की पढ़ाई हिंदी में संभव हो रही है। आईआईटी और आईआईएम जैसे संस्थानों ने भी हिंदी माध्यम से प्रवेश देकर यह साबित किया है कि यह भाषा विज्ञान और प्रौद्योगिकी की भी उतनी ही समर्थक है, जितनी साहित्य और संस्कृति की।

हिंदी का भविष्य अत्यंत उज्ज्वल है। अपने वैज्ञानिक स्वरूप, सरल व्याकरण और विशाल शब्द-संपदा के कारण यह विश्व भाषा बनने की दिशा में निरंतर अग्रसर है। वर्तमान समय में यह मंदारिन और अंग्रेज़ी जैसी भाषाओं को चुनौती दे रही है। आज यह भारत की आत्मा बनकर न केवल राष्ट्रीय बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी पहचान बना रही है।

जय हिंद! जय हिंदी!

हिंदी प्राध्यापक
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, मुर्तज़ापुर
खंड पिहोवा, जिला कुरुक्षेत्र, हरियाणा

अपशिष्ट को संसाधन में बदलने का हुनर

सैक्टर-26 पंचकूला के विद्यालय में हो रहा है मिड-डे मील वेस्ट से वर्मी कम्पोस्ट निर्माण

संजीव अग्रवाल

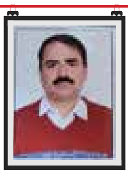

विद्यालय केवल ज्ञान प्राप्ति का केंद्र ही नहीं होते, बल्कि वे बच्चों के जीवन मूल्यों, संस्कारों और पर्यावरणीय चेतना को भी गढ़ते हैं। शिक्षा का अर्थ केवल पाठ्य पुस्तकों तक सीमित नहीं रहता, बल्कि वह व्यावहारिक जीवन कौशल और सामाजिक दायित्वों से भी जुड़ा होता है। जब विद्यालय सक्षम, सुंदर और सुसंस्कृत होता है तो विद्यार्थियों के भीतर भी सृजनशीलता और जिम्मेदारी की भावना स्वतःविकसित होती है।

विद्यालय परिसर का सौंदर्यीकरण इस दिशा में अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जब कोई बच्चा विद्यालय में प्रवेश करता है और उसे रंग-बिरंगे फूलों की क्यारी, छायादार वृक्षत था हरियाली से भरा प्रांगण दिखाई देता है तो उसका मन उल्लास से भर उठता है। प्रकृति से जुड़ने का यह अनुभव उसकी पढ़ाई को आनंदमय बना देता है। इसी क्रम में पंचकूला स्थित राजकीय आदर्श संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, सेक्टर-26 ने एक अनूठी पहल की है। यहाँ मिड-डे मील से बचने वाले वेस्ट पदार्थों का उपयोग कर कम्पोस्ट और वर्मी कम्पोस्ट (केंचुआ खाद) तैयार की जा रही है।

यह पहल विद्यालय को न केवल कचरामुक्त बना रही है, बल्कि विद्यार्थियों को भी अपशिष्ट प्रबंधन और पर्यावरण संरक्षण का जीवंत पाठ पढ़ा रही है। विद्यालय परिसर में इसके लिए दो गड्ढे बनाए गए हैं । पहले गड्ढे में मध्याह्न भोजन से बच जाने वाले अवशेष जैसे सब्ज़ियों के छिलके, बचा हुआ अन्न, फल के बीज और अन्य जैविक पदार्थ एकत्रित किए जाते हैं। इन्हें डालने के बाद उस पर पेड़ों के सूखे पत्ते और गोबर की एक परत बिछा दी जाती है। इससे अपशिष्ट पदार्थ आसानी से सड़कर जैविक खाद में परिवर्तित हो जाते हैं।

दूसरा गड्ढा विशेष रूप से वर्मी कम्पोस्ट के लिए तैयार किया गया है। इसमें केंचुओं को पाला गया है जो जैविक अपशिष्ट को अत्यंत महीन और पौष्टिक खाद में बदल देते हैं। इस केंचुआ खाद का उपयोग विद्यालय के उद्यान, पौधों और वृक्षों में किया जाता है। परिणाम स्वरूप विद्यालय का बगीचा हरा-भरा और आकर्षक बन गया है। फूलों की रंगत और पौधों की ताजगी स्वयं इस पहल की सफलता की कहानी कहते हैं।

विद्यालय प्रबंधन ने यह सुनिश्चित किया है कि सभी कक्षाओं के विद्यार्थियों को इस प्रक्रिया की जानकारी दी जाए। बच्चों को न केवल कम्पोस्ट और वर्मी कम्पोस्ट बनाने की विधि सिखाई जाती है, बल्कि उन्हें गीले और सूखे कचरे के भेद के बारे में भी बताया जाता है। इस प्रकार छात्र-छात्राएँ व्यावहारिक रूप से यह सीख रहे हैं कि वेस्ट को किस प्रकार सही ढंग से उपयोग में लाया जा सकता है। इससे उनके भीतर पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता विकसित हो रही है और स्वच्छता के महत्त्व का बोध भी हो रहा है।

विद्यालय की यह पहल आगंतुकों के लिए भी प्रेरणादायी है। यहाँ आने वाले अतिथियों को उपहार स्वरूप केंचुआ खाद अथवा कम्पोस्ट खाद भेंट की जाती है। यह न केवल एक अभिनव उपहार है, बल्कि 'स्वच्छ हरियाणा' और 'हरित हरियाणा' के संदेश को आगे बढ़ाने का सशक्त माध्यम भी है।

इस प्रयोग ने विद्यालय को सचमुच एक आदर्श स्वरूप प्रदान किया है। विद्यार्थी अब कक्षा में केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं रहते, बल्कि वे व्यवहार में भी सीखते हैं कि प्रकृति के साथ संतुलन बनाए रखना कितना आवश्यक है। अपशिष्ट को बोझ न मानकर संसाधन में बदलने की कला उन्होंने विद्यालय में ही सीख ली है।

आज जब पूरी दुनिया पर्यावरण संकट और कचरे की समस्या से जूझ रही है, तब पंचकूला का यह राजकीय विद्यालय अपने छोटे से प्रयास से एक बड़ा संदेश दे रहा है- अगर हम चाहें तो हर अपशिष्ट का सदुपयोग कर सकते हैं और धरती को स्वच्छ व सुंदर बना सकते हैं। यह पहल अन्य विद्यालयों के लिए भी अनुकरणीय है और निश्चित रूप से बच्चों के मन-मस्तिष्क में पर्यावरण संरक्षण की अमिट छाप छोड़ने वाली है।

प्राचार्य
राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, सेक्टर-26, पंचकूला, हरियाणा

पंचकूला का होनहार चंदन

दसवीं में 97 प्रतिशत अंक और सुपर-100 का ज़िला टॉपर

दीपा रानी

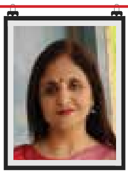

सपने वे नहीं जो आप नींद में देखते हैं। सपने वे हैं जो आपको सोने नहीं देते। कुछ ऐसे ही सपने हैं राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सेक्टर 19 में पढ़ने वाले विद्यार्थी चंदन के। 1 जनवरी, 2007 को बिहार राज्य के एक गाँव में अवध किशोर के घर एक बच्चे ने जन्म लिया, नामकरण हुआ-चंदन। अपनी माँ का दुलारा चंदन अपनी परिवार की आर्थिक परिस्थितियों के कारण पंचकूला आ गया। चंदन के पिता एक ऑटो ड्राइवर हैं और अपनी आजीविका इसी से कमाते हैं। छठी कक्षा में चंदन ने राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सेक्टर-19 में दाखिला लिया। बचपन से ही चंदन जिज्ञासु रहा है। इस विद्यार्थी की पढ़ने की ललक को देखकर लगता था कि वह अवश्य एक दिन कुछ न कुछ करके दिखाएगा।

अपनी इसी लगन और मेहनत के बल पर इस वर्ष हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड द्वारा आयोजित दसवीं की वार्षिक परीक्षा में पंचकूला ज़िले के राजकीय विद्यालयों में चंदन ने 97% अंक लेकर प्रथम स्थान प्राप्त कर अपने माता-पिता और विद्यालय का नाम रोशन किया। अपनी इसी उपलब्धि के साथ-साथ चंदन ने सुपर-100 की लेवल-2 की परीक्षा में भी पंचकूला ज़िले में प्रथम रैंक और पूरे राज्य में नवाँ स्थान हासिल किया है। साइंस और गणित उसके पसंदीदा विषय हैं। बोर्ड परीक्षा में भी उसने साइंस में 99 और गणित में 100 अंक प्राप्त किए हैं। चंदन का सपना आईआईटी बॉम्बे से इंजीनियरिंग करने का है और उसके लिए वह कड़ी मेहनत कर रहा है। उसके लिए हर

दिन क़ीमती है। वह अपने किसी भी दिन को व्यर्थ नहीं गँवाना चाहता अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए। पढ़ाई के साथ-साथ चंदन ने स्कूल, खंड और ज़िला स्तर पर होने वाली साइंस की सभी गतिविधियों में भाग लिया है और कई इनाम भी जीते हैं।

चंदन अपने जीवन में एक नियम का पालन करता है, जो अक्सर सभी अध्यापक बच्चों से कहते हैं- 'आज का काम कल पर मत छोड़ो, और जब भी एक्स्ट्रा टाइम मिले तो रिवीज़न करो।' चंदन की दसवीं कक्षा की इंचार्ज अंजना शर्मा ने बताया कि वह एक बहुत ही अनुशासित विद्यार्थी है। विद्यालय में हमेशा उसे पढ़ते ही देखा गया है। वह कक्षा में अपने बाकी सभी सहपाठियों की मदद भी करता है।

स्कूल की प्रधानाचार्या निर्मल ढुल ने बताया कि चंदन ने अपने परिश्रम और लगन के बल पर न केवल ज़िले में प्रथम स्थान प्राप्त किया है, बल्कि स्कूल के सभी बच्चों के लिए प्रेरणा स्रोत भी है। उसने सभी बच्चों को प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण दिया है। वह अपने मित्रों की मदद करने के लिए हमेशा तत्पर रहता है। उसने कभी भी कोई क्लास नहीं छोड़ी है और अध्यापकों द्वारा दिए गए संपूर्ण ज्ञान को आत्मसात् किया है।

'अमर उजाला' द्वारा आयोजित मेधावी छात्र सम्मान समारोह में माननीय मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी द्वारा चंदन को प्रशंसा पत्र प्राप्त हुआ। आज़ादी की 79वीं वर्षगाँठ पर भी उसे ज़िला प्रशासन पंचकूला द्वारा माननीय महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रीमती श्रुति चौधरी के हाथों सम्मान पत्र प्राप्त हुआ।

चंदन के माता-पिता अपने बेटे की इस उपलब्धि से बहुत खुश हैं। वे चाहते हैं कि उनका बेटा खूब तरक्की करे। उसे वह सब मिले जो वह चाहता है। और चंदन चाहता है कि वह पढ़-लिखकर एक ऊँचा मुक़ाम हासिल करे ताकि वह अपने परिवार को एक खुशहाल जीवन दे सके। सच में धन्य हैं ऐसे माता-पिता, जिनके घर चंदन जैसा बेटा है।

चंदन अपनी सफलता का सारा श्रेय अपने उन सभी अध्यापकों को देता है जिन्होंने उसे अब तक पढ़ाया है। सच में, चंदन जैसे बच्चे समाज के लिए एक उदाहरण हैं। हम सभी को चंदन से बहुत उम्मीदें हैं और मेरी शुभकामनाएँ हैं कि वह भविष्य में वह सब कुछ हासिल करे जो वह चाहता है।

पीजीटी, फाइन आर्ट्स
रावमावि, सेक्टर-19
पंचकूला, हरियाणा

जड़ों से जुड़ाव हो तो ऐसा...

हर वर्ष अपने विद्यालय में बच्चों से मिलने आते हैं सैन्य अधिकारी

सत्यवीर नाहड़िया

जन्मभूमि तथा कर्मभूमि के प्रति लगाव स्वाभाविक है। जन्मभूमि को तो स्वर्ग से भी बढ़कर कहा गया है। रेवाड़ी जिले के ऐतिहासिक गाँव मनेठी के सैन्य अधिकारी ब्रिगेडियर संजय यादव का अपने गाँव के सरकारी स्कूल के प्रति लगाव देखते ही बनता है। वे पिछले सात-आठ वर्षों से जब भी छुट्टी पर आते हैं, तो लगभग दो-तीन घंटे विद्यालय में बच्चों के बीच वहीं बिताते हैं, जहाँ कभी उन्होंने अपनी पढ़ाई शुरू की थी। इतना ही नहीं, वे इस दौरान प्रतिवर्ष शताधिक विद्यार्थियों को ट्रैकसूट, स्कूल यूनिफॉर्म, बैग आदि भी वितरित करते हैं।

उल्लेखनीय है कि मनेठी निवासी भूतपूर्व सैनिक कृष्ण कुमार के सुपुत्र ब्रिगेडियर संजय यादव बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि के धनी रहे तथा पाँचवीं कक्षा तक मनेठी स्थित राजकीय प्राथमिक विद्यालय के छात्र रहे। परिवार की सैनिक परंपरा को आगे बढ़ाते हुए वे आगे चलकर सैन्य अधिकारी बने, किंतु अपने परिवार के संस्कारों के चलते अपनी जन्मभूमि तथा अपने पुराने विद्यालय को आज तक नहीं भूले हैं। यही कारण है कि ब्रिगेडियर संजय यादव प्रतिवर्ष छुट्टियों के दौरान अपने पुराने स्कूल पधारते हैं, जहाँ उनके पुराने सहपाठी एवं मित्र प्रदीप कुमार जेबीटी हैड के तौर पर सेवारत हैं। वे दो-तीन घंटे बच्चों के बीच बिताते हैं तथा बच्चों की ज़रूरत के मुताबिक उन्हें अनेक उपहार देकर लौटते हैं- कभी स्कूल यूनिफॉर्म, तो कभी स्कूल बैग, कभी ट्रैकसूट, तो कभी अन्य उपयोगी सामग्री।

जेबीटी हैड प्रदीप कुमार बताते हैं कि वे पिछले आठ वर्षों से प्रतिवर्ष सौ से अधिक विद्यार्थियों को प्रेरित एवं प्रोत्साहित करने के अलावा उपहार देकर जाते हैं, जिसके चलते बच्चों को उनका बेसब्री से इंतज़ार रहता है। इस बार उन्हें इन दिनों छुट्टी नहीं मिल पाई, किंतु उन्होंने विद्यालय को सहयोग राशि भेजकर डेढ़ सौ बच्चों के ट्रैकसूट भिजवाए हैं, जिन्हें बीते दिनों वितरित किया गया है। एक जैसे ट्रैकसूट पाकर जहाँ विद्यालय में एकरूपता व अनुशासन के साथ नई ऊर्जा का संचार हुआ है, वहीं विद्यार्थियों, अध्यापकों तथा अभिभावकों में अपने पुराने विद्यालय के प्रति समर्पण एवं लगाव रखने वाले सच्चे सैन्य अधिकारी के प्रति कृतज्ञता भाव उत्पन्न हुआ है, जिसके लिए सभी ने ब्रिगेडियर यादव की इस भावना का आभार ज्ञापित किया है।

विद्यालय के मौलिक मुख्याध्यापक वेद प्रकाश का मानना है कि ब्रिगेडियर यादव ने यह प्रेरक पहल चलाकर विद्यालय एवं समाज को नई दिशा दी है। इस कार्य से प्रेरित होकर अन्य लोग भी समाज एवं विद्यालय के लिए निरंतर कुछ नया करने की प्रेरणा लेंगे।

इस पूरे प्रकरण का सर्वाधिक उल्लेखनीय एवं प्रशंसनीय पक्ष यह है कि ब्रिगेडियर यादव इस पूरे प्रकल्प को प्रचार-प्रसार से दूर रखते हुए केवल एक नैतिक दायित्व भर मानते हैं। उनका मानना है कि ग्रामीण क्षेत्रों तथा सरकारी स्कूलों में प्रतिभाओं की कोई कमी नहीं है, बस उन्हें उचित मार्गदर्शन, प्रोत्साहन तथा मंच की आवश्यकता है, जिसे विद्यालय एवं समाज को मिलकर प्रदान करना चाहिए।

रेजांगला शौर्य समिति के संरक्षक कर्नल रणबीर सिंह यादव, जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी सुभाष चंद्र यादव, खंड शिक्षा अधिकारी संतोष तँवर तथा युवा चेतना संगठन के प्रधान नरेश भारद्वाज ने इस प्रेरक क्षण को समृद्ध परंपरा में बदलने के लिए ब्रिगेडियर यादव का आभार व्यक्त किया है। यदि सभी विद्यालयों को इस प्रकार का लगाव, जुड़ाव और संरक्षण मिले, तो विद्यालयों की दशा और दिशा दोनों ही बदली जा सकती हैं।

प्राचार्य
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
सीहा, रेवाड़ी, हरियाणा

'बाल सारथी' आपका अपना पन्ना है। हम चाहते हैं कि इसमें आपकी रचनाओं को स्थान दिया जाए। आपने कोई मौलिक कविता, कहानी या अन्य विधा की रचना लिखी हो तो अपने अध्यापक की सहायता से हमें ई-मेल या डाक द्वारा भेजें। आपकी रचनाओं को प्रकाशित करके हमें प्रसन्नता मिलेगी।

'बाल सारथी' आपको कैसा लगा, जरूर लिखना, अगले अंक में ज्ञान-विज्ञान और मनोरंजन की सामग्री लेकर फिर आपसे मिलूँगी।

- आपकी यामिका दीदी

सामान्य ज्ञान

1. हरियाणा राज्य की राजधानी कौन-सी है?
2. ताजमहल किस शहर में स्थित है?
3. भारत के पहले प्रधानमंत्री कौन थे?
4. हरियाणा राज्य किस वर्ष अस्तित्व में आया?
5. हरियाणा का राजकीय पशु कौन-सा है?
6. टिक्कर-ताल हरियाणा के किस ज़िले में है?
7. भारत का राष्ट्रीय ध्वज कब अपनाया गया?
8. हरियाणा का प्रसिद्ध 'सूरजकुंड मेला' किस जिले में लगता है?
9. भारत का राष्ट्रीय प्रतीक किस स्तंभ से लिया गया है?
10. दिल्ली का लाल किला किसने बनवाया था?

उत्तर- 1. चंडीगढ़ 2. आगरा में 3. पं. जवाहर लाल नेहरू 4. 1 नवम्बर, 1966 5. काला हिरण 6. पंचकूला में 7. 22 जुलाई,, 1947 8. फरीदाबाद में 9. अशोक स्तंभ (सारनाथ) 10. शाहजहाँ ने

पहेली बूझोः प्राणी खोजो

1. गणेश जी का वाहन
2. शिव जी का वाहन
3. दुर्गा जी का वाहन
4. सरस्वती जी का वाहन
5. कार्तिकेय जी का वाहन
6. गंगा जी का वाहन
7. यमराज का वाहन
8. इंद्रदेव का वाहन
9. सूर्य के रथ में सात...
10. शंकर जी के नाम वाला पक्षी
11. रामसेतु निर्माण में सहायक लघुजीव
12. सीता को पसंद आया था सोने का...

उत्तर- 1. मूषक (चूहा) 2. नंदी (बैल) 3. शेर 4. हंस 5. मोर 6. मगरमच्छ 7. भैंसा 8. हाथी 9. घोड़े 10. नीलकंठ 11. गिलहरी 12. मृग

संकलन-संयोजन :
प्रशान्त अग्रवाल
प्राथमिक विद्यालय डहिया
फतेहगंज पश्चिमी, ज़िला बरेली, उप्र

बाल पहेलियाँ

1. देश-विदेश में बात कराऊँ,
चुटकी में सब हाल सुनाऊँ।
मुझमें बसी है चिप बड़ी,
बूझो-बूझो, मैं चीज़ नई।

2. सब मेरी स्क्रीन पर लिखते,
पैन नहीं, उँगली से लिखते।
बच्चों के हाथों में अब मैं हूँ,
ज्ञान और गेम का संगम हूँ।

3. पहले मोटा था अब पतला हूँ,
दीवार पर टाँगा जा सकता हूँ।
पढ़ाता, गाता, ज्ञान बढ़ाता,
घर में सबका मन बहलाता।

4. ना मैं पेड़ हूँ, ना हूँ फूल,
पर हवा देता हूँ ठंडी-कूल।
गर्मी में सबको भाऊँ,
छत से लटककर मैं चल जाऊँ।

5. आग नहीं दिखेगी मुझमें,
पर मैं रसोई में रहता हूँ।
रोटी-सब्ज़ी झटपट दे दूँ,
बिजली से मैं चलता हूँ।

6. पैट्रोल नही हूँ पीता मैं
बिजली से ही जीता मैं।
ऑफिस जाओ आराम से,
घूमो शहर हर काम से।

7. दो नहीं, चार पैर मेरे,
छत है मुझ पर, स्टीयरिंग घेरे।
भूख नहीं, पर पेट है बड़ा,
इंधन पीकर भागूँ ज़रा।

उत्तर- 1. स्मार्टफोन, 2. टैबलेट / टैब, 3. स्मार्ट टीवी, 4. पंखा, 5. इंडक्शन-चूल्हा, 6. इलेक्ट्रिक स्कूटर, 7. कार

डॉ. सत्यवान सौरभ
333, परी वाटिका, कौशल्या भवन
बड़वा (सिवानी), भिवानी
हरियाणा- 127045

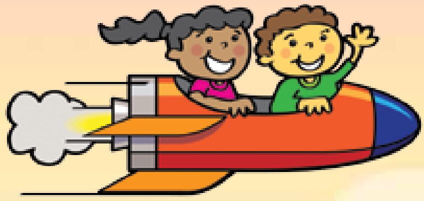

सोना और डंबू

'मैं बहुत थक गई हूँ। अब एक कदम भी नहीं चला जाता। आज मैं घर पर ही रहूँगी, आप जाइए काम पर।' नन्हीं चींटी सोना ने पति डंबू से कहा। डंबू मुस्कुराया -'ओह! तो आज मेरी सोना थक गई है। चलो, आराम कर लो।'

सोना गुस्से से बोली -'मैं रोज तुमसे ज्यादा भारी सामान उठाती हूँ, पर आज सचमुच थक गई हूँ।'

'ठीक है', डंबू ने कहा, 'आज तुम आराम करो, कल साथ चलेंगे।'

शाम को डंबू काम करके लौटा। 'कैसी हो अब?' उसने पूछा। सोना सेब चबाते हुए बोली 'बहुत मज़े में हूँ।'

डंबू सब समझ गया, पर चुप रहा। अगली सुबह फिर डंबू ने कहा -'चलो, आज साथ काम पर चलते हैं।'

सोना टालने लगी। तब डंबू गंभीर हुआ -'सोना, हम चींटियाँ हैं। घर पर बैठकर बहाने नहीं बना सकते। बहाने तो इंसान करते हैं। हमें तो मेहनत करनी ही होगी, वरना भोजन कहाँ से आएगा?'

सोना चुप रही। डंबू बोला-'सर्दी आने वाली है। खाने की कमी होगी। याद रखो, चींटियाँ कभी हार नहीं मानतीं। जब छोटा सा जीव हार नहीं मानता, तो इंसान भी हमसे प्रेरणा लेते हैं। मेहनत और एकता ही हमारी ताकत है।'

सोना को अपनी गलती समझ में आ गई। उसने सिर हिलाया और मुस्कुराते हुए बोली -'हाँ, अब मैं टालमटोल नहीं करूँगी। चलो, काम पर चलते हैं।'

दोनों मिलकर भोजन की तलाश में निकल पड़े।

प्रिया देवांगन 'प्रियू'
राजिम, जिला- गरियाबंद, छत्तीसगढ़

अंतरिक्ष-यात्रा

आओ! हम योजना बनाएँ,
अंतरिक्ष-यात्रा पर जाएँ।

चंदा मामा के घर ठहरें,
धमाचौकड़ी वहीं मचाएँ।

नए-नए रहस्य जानेंगे,
मस्ती से छुट्टियाँ बिताएँ।

सौर-ऊर्जा-यान क्षितिज पर,
बड़े मजे से खूब उड़ाएँ।

शून्य-गुरुत्वाकर्षण में हम,
नए-नए करतब दिखलाएँ।

मिट्टी, पानी, खनिज, धातुएँ,
कई शीशियों में भर लाएँ।

वहीं से देखेंगे धरती को,
हरियाली पर बलि-बलि जाएँ।

मंगल ग्रह अगला पड़ाव है,
अपनी बस्ती नई बसाएँ।

गगनयान इसरो भेजेगा,
यात्रियों में नाम लिखाएँ।

गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
117, आदिल नगर, विकास नगर
लखनऊ-226022

रंग-बिरंगी सब्ज़ी

लाल टमाटर हँस रहा था, काले बैंगन को देख कर।
गोभी को भी गुस्सा आया, वह बोली कुछ ऐंठ कर।।

सुन रे मेरे लाल टमाटर, क्यों इतना इतराते हो,
बैंगन को काला बताते हुए तनिक नहीं शर्माते हो।।

सुन री मेरी गोभी मौसी, तुम मुझको ज्ञान सिखाओगी,
काले-कलूटे बैंगन को तुम मेरे पास बिठाओगी।।

पास बैठाने की बात नहीं है, तुम भी सब्ज़ी में आते हो,
गाजर, चुकंदर भी तुम जैसी, तुम रंग पर क्यों इतराते हो।।

गोभी मौसी बड़ी भोली हो, बैंगन को राजा बनाती हो,
बैंगन तो बैंगन ही रहेगा, क्यों इसको ताज पहनाती हो।।

रितु राम 'बनिया'
प्राथमिक शिक्षक
राजकीय प्राथमिक पाठशाला, रामनगर, कैथल, हरियाणा

खेल-खेल में विज्ञान

दर्शन लाल बवेजा

आदरणीय अध्यापक साथियो व उत्साही विद्यार्थियो! खेल-खेल में विज्ञान शृंखला के अंतर्गत कुछ नई और रोचक विज्ञान गतिविधियाँ आपके समक्ष प्रस्तुत हैं-

1. गुणकारी नीम स्वास्थ्य की रक्षक-

भारत की प्राचीन परंपरा में नीम को औषधीय गुणों से भरपूर वृक्ष माना गया है। इसके पत्ते, छाल और फल अनेक बीमारियों के इलाज में उपयोगी होते हैं। विशेषकर मानसून और सावन के महीने में नीम की हरी पत्तियाँ खाने की परंपरा है। ऐसा माना जाता है कि इस मौसम में नीम की पत्तियों में रोग-नाशक क्षमता अधिक होती है, जो शरीर को मौसमी बीमारियों और संक्रमण से बचाती है।

प्रतिदिन नीम की दो परिपक्व पत्तियाँ चबाकर खाने से शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली मजबूत होती है। यह खून को शुद्ध करती हैं, जिससे कील-मुँहासे, फोड़े-फुंसी और त्वचा रोगों की समस्या नहीं होती। साथ ही, यह पाचन तंत्र को भी दुरुस्त बनाए रखती हैं। मानसून में जब वातावरण में बैक्टीरिया व वायरस तेजी से फैलते हैं, ऐसे समय में नीम की पत्तियाँ डेंगू, मलेरिया और वायरल बुखार से बचाव में भी सहायक सिद्ध होती हैं।

विद्यालय प्रांगण में विद्यार्थियों द्वारा लगाए गए नीम के पौधे आज बड़े होकर उनके स्वास्थ्य रक्षक बन रहे हैं। कक्षा-आठ के विद्यार्थियों को जब नीम की पत्तियाँ खाने का सही तरीका बताया गया, तो पहले उन्हें कड़वाहट महसूस हुई, लेकिन थोड़ी ही देर में उनके मुँह में मिठास का स्वाद आने लगा। इससे उनकी भ्रांति दूर हुई और वे इसके औषधीय महत्त्व को समझ सके। वास्तव में नीम जैसी प्राकृतिक औषधि यदि हम अपने दैनिक जीवन में अपनाएँ, तो अनेक रोगों से सहज ही बचाव किया जा सकता है।

2. ज्वालामुखी मॉडल : विज्ञान का विस्फोटक अनुभव-

विद्यार्थियों ने रचनात्मकता और वैज्ञानिक समझ का परिचय देते हुए ज्वालामुखी (वॉल्केनो) का वर्किंग मॉडल तैयार किया। इस मॉडल के माध्यम से उन्होंने रासायनिक अभिक्रिया, गैस निर्माण और दबाव वृद्धि की प्रक्रिया को रोचक ढंग से प्रदर्शित किया, जिसे देखकर सभी विद्यार्थी उत्साहित हो उठे।

कक्षा-7 के प्रतिभाशाली विद्यार्थियों अभिषेक और कुणाल ने वार्षिक आंतरिक मूल्यांकन में प्रोजेक्ट वर्क के रूप में यह मॉडल प्रस्तुत किया। उन्होंने इसे कागज, गत्ता, फेविकोल, रंग, रद्दी अखबार और प्लास्टिक की बोतल की सहायता से तैयार किया। प्रयोग का विशेष आकर्षण यह रहा कि इसमें विद्यार्थी प्रत्यक्ष रूप से गैस के दबाव और रासायनिक अभिक्रिया द्वारा ज्वालामुखी के फटने जैसी घटना का अनुभव कर सके।

जब ज्वालामुखी के मुख से लावे के रूप में झागदार द्रव बाहर निकला, तो उपस्थित सभी विद्यार्थी आनंदित और रोमांचित हो उठे। प्रयोग में सोडियम बाइकार्बोनेट (ईनो), सिरका, फूड कलर और पानी का उपयोग किया गया। सिरके में सोडियम बाइकार्बोनेट डालते ही रासायनिक अभिक्रिया से कार्बन डाइऑक्साइड गैस बनने लगी। गैस के दबाव से प्लास्टिक बोतल के मुख से झागदार द्रव ज्वालामुखी के मुँह से लावे की तरह बाहर आने लगा। विद्यार्थियों ने इस प्रयोग के माध्यम से गैस निर्माण, दबाव वृद्धि और विस्फोट की प्रक्रिया को न केवल समझा, बल्कि विज्ञान को रोचक और व्यावहारिक रूप में अनुभव भी किया।

3. बेकार एलईडी बल्ब से बने मशरूम डेकोरेटिव-

विद्यालय में विद्यार्थियों की सृजनात्मकता को प्रोत्साहित करने हेतु अवकाश कालीन गृहकार्य के अंतर्गत 'बेस्ट आउट ऑफ वेस्ट' विषय पर गतिविधियाँ करवाई गईं। इसी क्रम में कक्षा 8 के विद्यार्थियों ने बेकार हो चुके एलईडी बल्बों का प्रयोग कर रंग-बिरंगे और आकर्षक मशरूम डेकोरेटिव पीस बनाए।

इन सजावटी पीस की खासियत यह रही कि इन्हें मशरूम की विश्व-प्रसिद्ध प्रजाति 'अमानिटा मुस्कारिया' की संरचना और रंग-संयोजन के आधार पर तैयार किया गया। विद्यार्थियों ने इन मशरूम मॉडल्स को विज्ञान से जोड़ते हुए विद्यालय के विज्ञान कक्ष को भेंट किया।

सामग्रीः पुराने एलईडी बल्ब, पेंट कलर (लाल, सफेद, पीला, हरा), ग्लू गन, प्लास्टिक बोतल के ढक्कन।

पहले बल्ब की सफाई कर उसे सुखाया गया। ऊपरी गोल हिस्से को लाल रंग से पेंट कर उस पर सफेद बिंदु बनाए गए। बल्ब के निचले भाग को पीला रंग दिया गया और नीचे हरी घास व फूल की आकृतियाँ सजाई गईं। बल्ब को टिकाने के लिए प्लास्टिक बोतल का ढक्कन आधार बनाया गया और ग्लू गन से चिपकाया गया।

तैयार मॉडल को सूखने के बाद विज्ञान कक्ष में सजाया गया। इस गतिविधि ने विद्यार्थियों को बेकार वस्तुओं के रचनात्मक उपयोग, विज्ञान व प्रकृति की संरचनाओं की पहचान और पर्यावरण संरक्षण का व्यावहारिक संदेश दिया। ऐसी गतिविधियाँ न केवल उनकी कलात्मक अभिव्यक्ति को मंच देती हैं, बल्कि विज्ञान, पर्यावरण-जागरूकता और नवाचार की भावना भी जागृत करती हैं।

4. ऊष्मा चालनछड़ से गिरे मोम के टुकड़े-

कक्षा-7 के विद्यार्थियों ने ऊष्मा चालन से संबंधित एक रोचक प्रयोग किया। उन्होंने एक लोहे की छड़ को दो ईंटों के बीच फँसाया। छड़ पर कुछ दूरी पर मोम के छोटे टुकड़े चिपकाए और छड़ के एक सिरे को मोमबत्ती की लौ से गर्म किया।

कुछ ही देर में लौ के पास वाला मोम पिघलकर नीचे गिर गया। फिर क्रमशः आगे के टुकड़े भी पिघलते चले गए। इस गतिविधि से यह स्पष्ट होता है कि धातुएँ ऊष्मा की सुचालक होती हैं, यानी वे गर्मी को एक सिरे से दूसरे सिरे तक पहुँचा सकती हैं। जैसे-जैसे गर्मी छड़ में आगे बढ़ती है, मोम के टुकड़े पिघलते जाते हैं। यह प्रक्रिया ऊष्मा चालन को सरलता से प्रदर्शित करती है।

इस प्रयोग को विद्यार्थियों ने स्वयं तैयार किया, जो उनके अवलोकन कौशल, वैज्ञानिक सोच और व्यावहारिक ज्ञान को दर्शाता है।

5. तापमापी का प्रयोग करना सीखा-

कक्षा-7 के विद्यार्थियों के लिए एक और रोचक गतिविधि आयोजित की गई। इस अवसर पर उन्हें विभिन्न प्रकार के तापमापियों (थर्मामीटर) से तापमान मापने की विधि और उनके उपयोग के बारे में सिखाया गया।

संपर्क फाउंडेशन के सहयोग से 'संपर्क टीवी डिवाइस' और स्मार्ट बोर्ड का उपयोग कर गतिविधि को और प्रभावी बनाया गया। विज्ञान अध्यापक दर्शन लाल के निर्देशन में विद्यार्थियों को डॉक्टरी थर्मामीटर, प्रयोगशाला थर्मामीटर और डिजिटल थर्मामीटर की बनावट, उनमें प्रयुक्त पदार्थ, तापमान सीमा तथा विविध उपयोगों की जानकारी दी गई।

प्रायोगिक सत्र के दौरान विद्यार्थियों ने गरम व ठंडे द्रव का तापमान मापा और मानव शरीर का तापमान ज्ञात किया। उन्होंने सेल्सियस, फारेनहाइट और केल्विन स्केल के बीच रूपांतरण करना भी सीखा। गणना के अनुसार मनुष्य का शरीर तापमान 37 डिग्री सेल्सियस, 98.6 डिग्री फारेनहाइट और 310.15 केल्विन पाया गया।

अच्छा, तो आदरणीय अध्यापक साथियो और प्रिय विद्यार्थियो! आगामी अंक में फिर मुलाकात होगी नई विज्ञान गतिविधियों के साथ। आशा है आप उन्हें भी पसंद करेंगे और करके देखेंगे।

साइंस मास्टर / ईएसएचएम
पीएमश्री राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, दामला
खंड जगाधरी, यमुनानगर, हरियाणा

विचारणीय

क्यों असफल होते हैं बच्चे?

रहमदीन

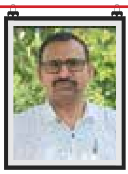

बच्चे हमारे समाज का भविष्य होते हैं। हर माँ-बाप का सपना होता है कि उनका बच्चा आगे बढ़े, अच्छा इंसान बने और जीवन में सफल हो। लेकिन कई बार ऐसा नहीं होता। कई बच्चे स्कूल में ठीक से पढ़ नहीं पाते, परीक्षाओं में पीछे रह जाते हैं या पढ़ाई से डरने लगते हैं। ऐसे में सवाल यह उठता है कि आखिर ऐसा क्यों होता है? बच्चे असफल क्यों होते हैं? क्या यह उनकी गलती है या इसके पीछे और भी वजहें होती हैं ?

कई बार बच्चों पर बहुत ज़्यादा पढ़ाई का दबाव डाल दिया जाता है। हर बच्चा एक जैसा नहीं होता। किसी को गणित अच्छा लगता है तो किसी को चित्र बनाना। लेकिन जब बच्चों पर हर विषय में तेज़ होने का दबाव डाल दिया जाता है, तो वे डरने लगते हैं। डर से वे सवाल नहीं पूछते, गलती करने से कतराते हैं और धीरे-धीरे पढ़ाई में अपनी रुचि खो बैठते हैं। ऐसे में बच्चों को यह समझाना ज़रूरी है कि गलती करना बुरा नहीं है, बल्कि गलती से हमें सीख मिलती है। हमें उन्हें सिखाना चाहिए कि मेहनत करना ज़रूरी है, नंबर आना नहीं।

कई बार माँ-बाप अपनी अधूरी ख़्वाहिशें भी बच्चों पर थोप देते हैं। अगर माता-पिता डॉक्टर नहीं बन पाए, तो वे चाहते हैं कि उनका बच्चा डॉक्टर बने और उनके सपनों को पूरा करे, भले ही बच्चे की रुचि डॉक्टर बनने की बजाय कहीं और हो। ऐसा करने से बच्चा तनाव में आ जाता है। वह अपनी रुचियों को भूलकर दूसरों को खुश करने की कोशिश करता है। माता-पिता को चाहिए कि वे बच्चे की रुचियों को समझें, उसका साथ दें और उसकी प्रतिभा को बढ़ावा दें। हर बच्चा ख़ास होता है, उसे अपना रास्ता चुनने का मौका मिलना चाहिए।

यह सच है कि हर बच्चा एक जैसा नहीं सीखता। कोई बोलकर जल्दी सीखता है, कोई देखकर, और कोई करके। अगर स्कूल या घर में पढ़ाई का तरीका बच्चे की समझ के अनुसार नहीं है, तो बच्चा पीछे रह जाता है। स्कूल के शिक्षकों और माता-पिता को चाहिए कि वे बच्चे की सीखने की शैली को अच्छे से समझें और उसी के अनुसार उसे समझाएँ। उदाहरण देकर, कहानी से, खेल-खेल में पढ़ाने से बच्चे जल्दी सीखते हैं। वहीं दूसरी ओर अगर स्कूल का माहौल डराने वाला हो, शिक्षक डाँटने वाले हों या बच्चे के सवाल पूछ लेने पर गुस्सा करें, तो भी बच्चा सीखने में दिलचस्पी नहीं लेता। कई बार बच्चों को शिक्षक का पढ़ाया कुछ भी समझ में नहीं आता, लेकिन वे डर के कारण उनसे पूछ नहीं पाते। स्कूल और शिक्षकों को बच्चों के लिए दोस्त जैसा बनना चाहिए। जब बच्चा बिना डरे सवाल पूछ पाए, तभी वह ठीक से सीख सकेगा।

कई बार बच्चों को शुरू में ही किसी विषय में दिक्कत होती है, लेकिन समय रहते अगर मदद न मिले, तो वह दिक्कत धीरे-धीरे बढ़ती जाती है। धीरे-धीरे बच्चा उस विषय से डरने लगता है और उसमें कमजोर होता जाता है। माता-पिता और शिक्षकों दोनों को चाहिए कि वे बच्चे की परेशानी को जल्दी पहचानें और उसकी हरसंभव मदद करें। उसे अलग से समझाएँ, ताकि वह फिर से आत्मविश्वास पा सके। अगर बच्चे का मन किसी वजह से परेशान हो- जैसे परिवार में लड़ाई-झगड़ा हो गया हो, माता-पिता अलग हो गए हों, घर का माहौल अशांत हो तो उसका असर भी बच्चे की पढ़ाई पर पड़ता है। बच्चा पढ़ाई में ध्यान नहीं लगा पाता, वह खुद को अकेला महसूस करता है और धीरे-धीरे कमज़ोर हो जाता है। ऐसे बच्चों को प्यार, सुरक्षा और किसी के साथ की ज़रूरत होती है। अगर उनका मन खुश होगा, तो ही वे पढ़ाई में भी अच्छा करेंगे। माता-पिता को चाहिए कि वे बच्चों से रोज़ बात करें, उनकी भावनाओं को समझें और उन्हें भरोसा दिलाएँ कि वे अकेले नहीं हैं।

आजकल के बच्चे घंटों मोबाइल और टीवी में लगे रहते हैं। इससे उनका ध्यान पढ़ाई से हट जाता है। नींद पूरी नहीं होती, आँखें कमज़ोर होती हैं और दिमाग भी सुस्त हो जाता है। बच्चों के लिए मोबाइल या टीवी का समय सीमित करना चाहिए। साथ ही, उन्हें खेलकूद, कहानियों और किताबों में रुचि लेने के लिए प्रेरित करना चाहिए। अगर बच्चा शारीरिक रूप से कमजोर है, ठीक से खाना नहीं खाता या हमेशा बीमार रहता है, तो भी वह ठीक से ध्यान नहीं लगा सकता। सेहत और पढ़ाई एक-दूसरे से जुड़ी होती हैं। बच्चों को संतुलित भोजन, पर्याप्त नींद और खेलकूद का समय देना ज़रूरी है। इससे उनका शरीर और दिमाग दोनों मजबूत बनते हैं।

कई बार बच्चों की दूसरों से तुलना और ताने मारना भी उन्हें असफलता की ओर धकेल देता है। देखो, पड़ोसी का बेटा कितना अच्छा है, तुमसे तो कुछ नहीं होगा। इस तरह की बातें बच्चों के आत्मविश्वास को तोड़ देती हैं। जब बार-बार किसी को ताना दिया जाए, तो वह खुद पर भरोसा करना भी छोड़ देता है। बच्चों की तुलना किसी और से करने से बचना चाहिए। क्योंकि हर कोई अलग है। दो सगे भाई भी एक जैसे नहीं हो सकते। बच्चों की छोटी-छोटी कोशिशों की तारीफ करनी चाहिए। इससे उनमें आत्मविश्वास आता है और वे खुद को बेहतर बनाने की कोशिश करते हैं।

बच्चों की असफलता कहीं से भी सिर्फ़ उनकी नहीं होती, उसमें हम बड़ों की भी ज़िम्मेदारी होती है। अगर हम सही समय पर, सही तरीके से उनका साथ दें, तो कोई भी बच्चा असफल नहीं होगा। बच्चों को समझने की ज़रूरत है, उन्हें समय और प्यार देने की ज़रूरत है। याद रखें, कि हर बच्चा एक बीज की तरह होता है। उसे सही मिट्टी, सही पानी और सही धूप मिले, तो वह ज़रूर फल देगा। हमें बस धैर्य रखना है और विश्वास करना है।

प्रोग्राम कोऑर्डिनेटर
लैंग्वेज़ एंड लर्निंग फ़ाउंडेशन
पंचकूला

सतरंगी इंद्रधनुष

बच्चो! बरसात में आसमान में बादल उमड़-घुमड़ कर शोर मचाते हैं। क्या आपने कभी वर्षा के बाद आसमान में एक अनोखा सुहावना दृश्य देखा है ? इस दृश्य में आसमान में अर्धवृत्ताकार के रूप में एक सतरंगी आकृति दिखाई देती है। क्या इस आकृति को पहचानते हो? आपने बिल्कुल सही पहचाना- इस सतरंगी आकृति को इंद्रधनुष कहते हैं। बच्चो! आज इस आलेख के माध्यम से इस सतरंगी आकृति को जानेंगे।

जानो इंद्रधनुष को

यह कब दिखाई देता है? कैसे बनता है? क्यों बनता है? और सतरंगी आकृति में कितने रंग होते हैं? इस लेख में आपको इन तमाम प्रश्नों की जानकारी दी जाएगी।

सबसे पहले तो आपको यह बतायें कि यह आकृति तब दिखाई देती है, जब वर्षा के बाद धूप निकलती है। वातावरण में उपस्थित वर्षा की बूँदें सूर्य के प्रकाश से टकराती हैं तो ये बूँदें एक प्रिज्म की तरह कार्य करती हैं। अतः इसे समझने के लिए सर्वप्रथम प्रिज्म की क्रियाविधि को समझेंगे।

प्रिज्म

प्रिज्म की यह विशेषता होती है कि जब श्वेत प्रकाश को प्रिज्म से गुजारा जाता है तो यह प्रकाश सात अलग-अलग रंगों की पट्टिकाओं (बैंगनी, आसमानी, नीला, हरा, पीला, नारंगी और लाल) में विभक्त हो जाता है।

यह घटना वर्ण-विक्षेपण कहलाती है और सात रंगों के इस क्रम को वर्ण-क्रम कहते हैं। इसमें रंगों का क्रम निश्चित होता है। अंग्रेज़ी में हम इसे VIBGYOR के नाम से जानते हैं, जिसका अर्थ है- V -Violet - बैंगनी, I - Indigo-आसमानी , B- Blue–नीला, G- Green–हरा, Y- Yellow–पीला, O- Orange-नारंगी, R- Red -लाल

इंद्रधनुष का बनना

वर्षा के बाद वर्षा की हल्की बूँदें पृथ्वी में न गिरकर आसमान में ही रह जाती हैं। जब सामने से सूर्य का प्रकाश इन बूँदों पर पड़ता है तो ये बूँदें एक प्राकृतिक प्रिज्म का कार्य करती हैं और सूर्य का प्रकाश इनसे टकराकर सात रंगों (बैंगनी, आसमानी, नीला, हरा, पीला, नारंगी और लाल) की पट्टिकाओं में विभक्त हो जाता है। हमें यह मनोहर दृश्य इंद्रधनुष दिखाई देता है। इस कारण इंद्रधनुष को प्राकृतिक प्रिज्म कहा जाता है। इंद्रधनुष की घटना प्रकाश के अपवर्तन, पूर्ण आंतरिक परावर्तन और वर्ण-विक्षेपण पर आधारित है। इंद्रधनुष सदैव सूर्य की विपरीत दिशा में ही दिखाई देता है।

दोहरा इंद्रधनुष

कभी-कभी लगातार दो इंद्रधनुष एक साथ दिखाई देते हैं। यह तब संभव होता है जब एक इंद्रधनुष बनने के बाद निकली हुई रंगीन रोशनी पुनः श्वेत प्रकाश में परिवर्तित हो जाती है और यह श्वेत प्रकाश वातावरण में उपस्थित दूसरी पानी की बूँदों से टकराता है। इस प्रकार बने इंद्रधनुष में रंगों का क्रम ठीक उल्टा होता है।

झरनों और फव्वारों में इंद्रधनुष

पानी के फव्वारों और झरनों में भी इंद्रधनुष देखा जा सकता है। जब फव्वारों या झरनों के ऊपर पानी की छोटी-छोटी बूँदें भाप/वाष्प के रूप में आती हैं, तो सूर्य का प्रकाश इन बूँदों से टकराकर इंद्रधनुष का निर्माण करता है।

इंद्रधनुष का आकार

बच्चो! इंद्रधनुष वास्तव में गोल होता है, परंतु ज़मीन से हमें यह केवल अर्धवृत्ताकार के रूप में ही दिखाई देता है।

यदि ऊँचाई पर उड़ते हुए हवाई जहाज से इसे देखें तो हमें यह पूरा गोल दिखाई देता है। तो अब आप इंद्रधनुष के बारे में पूरी जानकारी प्राप्त कर चुके हैं। आज ही आर्ट पेपर पर इंद्रधनुष बनाइए और उसकी क्रियाविधि अपने दोस्तों को समझाइए।

डॉ. कमलेन्द्र कुमार
रावगंज, कालपी, ज़िला- जालौन
उत्तर प्रदेश- 285204

2025

सितंबर माह
के त्यौहार व विशेष दिवस

1 सितंबर- राष्ट्रीय पोषण सप्ताह
5सितंबर - शिक्षक दिवस / मिलाद-उन-नबी
8 सितंबर - अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस
13 सितंबर - विश्व प्राथमिक उपचार दिवस
14 सितंबर - हिंदी दिवस
15 सितंबर - इंजीनियर दिवस
16 सितंबर - ओजोन दिवस
17 सितंबर- भगवान विश्वकर्मा जयंती
22 सितंबर- महाराजा अग्रसेन जयंती
23 सितंबर- हरियाणा वार हीरोज़ शहीदी दिवस
27 सितंबर - विश्व पर्यटन दिवस
29 सितंबर - विश्व हृदय दिवस

'शिक्षा सारथी' का यह अंक कैसा लगा? अपनी राय, विचार या सुझाव हमें अवश्य लिखें। लेखकों व शिक्षाविदों से अनुरोध है कि शिक्षा जगत् से जुड़े विषयों, योजनाओं, मुद्दों से संबंधित रचनाएँ व लेख हमें भेजें। अपने-अपने क्षेत्रों में होने वाली शिक्षा जगत् की गतिविधियों की रिपोर्ट भी हमें भेजें। हमारा पता- शिक्षा सारथी, तृतीय तल, शिक्षा सदन, सैक्टर-5, पंचकूला।
मेल भेजने का पता-
shikshasaarthi@gmail.com

The Relevance of Teachers' Day

Manoj Kumar Vashishtha

Introduction:

In India, Teachers' Day is celebrated on September 5th every year, marking the birth anniversary of Dr. Sarvepalli Radhakrishnan, a former President of India. The first Teachers' Day was celebrated on September 5, 1962. Dr. Radhakrishnan had expressed his desire to his students that instead of celebrating his birthday separately, it would be his privilege if September 5th could be observed as Teachers' Day. Dr. Radhakrishnan was born on September 5, 1888, in Tirumani village, Tamil Nadu, to a Brahmin family. He was fond of reading books from a young age and was greatly influenced by Swami Vivekananda. Dr. Radhakrishnan passed away on April 17, 1975, in Chennai. The celebration of Teachers' Day in India began in honor of Dr. Sarvepalli Radhakrishnan's birth anniversary.

Importance of Teachers:

Teachers hold a special place in every human's life. It is the teacher who makes a person a human being. The position of a teacher in human life is very high. This is why teachers are revered. Teachers impart knowledge, shape character, and inspire students to follow the right path in life.

As Kabir Das ji says:

"Sab dharti kagaz karun, likhani sab banray.
Saat samudra ki masi karun, guru gun likha na jay."

(If the entire earth were turned into paper, and all the forests were turned into pens, and the seven seas were turned into ink, even then the virtues of a teacher could not be fully described.)

Guru is Great

In ancient India, Teacher-Disciple Tradition (the Guru-Shishya Parampara) has been highly valued. This tradition has played a significant role in shaping Indian culture. Teachers

play a crucial role in shaping a student's life and character.

As the saying goes:

"Guru Brahma, Guru Vishnu, Guru Devo Maheshwaraha.
Guru Saakshaat Para Brahma, Tasmai Shri Gurave Namaha."

(The teacher is Brahma, the teacher is Vishnu, the teacher is Maheshwara. The teacher is indeed the Supreme Brahman, and I offer my salutations to that teacher.)

Teachers play a vital role in shaping their students' lives and characters. It is said that a person's first teacher is their mother, who not only gives them life but also imparts knowledge about the basics of life. After that, other teachers play a significant role. Building a person's personality is a vast and challenging task. Providing education and shaping a student's character and personality is similar to a potter molding clay into a vessel. Just like a potter shapes and refines the clay, a teacher educates and shapes their students' personalities.

Kabir Das ji aptly describes this in the following couplet:

"Guru kumhar shishya kumbh hai, gadh-gadh kadhai khot.

Antar hath sahar dai, bahar bahai chot."

(The teacher is like a potter, and the student is like a pot. The teacher shapes the student and removes their defects, supporting them from within and molding them from without.)

This highlights the teacher's role in not just imparting knowledge but also refining the student's character, sometimes even using strict measures to guide them towards the right path. This is why teachers and Teachers' Day hold immense significance in Indian culture.

As Kabir Das ji further emphasizes:

"Guru paras ko antara, janat hain sab sant.
Vah loha kanchan kare, ye kari liye mahant."

(The difference between a guru and a philosopher's stone is known to all saints. The philosopher's stone turns iron into gold, but a guru makes their disciple great like themselves.)

This underscores the transformative power of a teacher in a student's life, elevating them to greatness. Teachers not only impart knowledge but also shape their students' personalities, helping them become better individuals.

Contribution of Teachers and Teachers' Day to Society

Dr. Sarvepalli Radhakrishnan used to say: "Books are the means through which we can build bridges between different cultures." This statement by Dr. Sarvepalli Radhakrishnan is not only true and relevant but also highlights the importance of education in building better relationships between individuals and cultures. Education is essential for the development of a society or a country. Being educated has always been crucial for a better life. Education plays a vital role in

shaping an individual's character and personality.

A teacher's role is not just limited to imparting knowledge but also to guide students in becoming better human beings. A nation can develop only when its teachers are qualified. Without teachers, the development of a country is impossible, and their contribution deserves immense appreciation. Teachers guide us in life and prepare us to face challenges with neutrality, enabling us to stand tall in the face of adversity. The vision of a better life is incomplete without education, and along with education, it is also essential to acquire originality and good manners.

Being educated and being a gentleman are both essential aspects of a person's personality. If a person is civilized, they are considered human; otherwise, they are considered akin to animals. It is to acquire this civility that we seek the guidance of a guru, so that we can lead a better life and become better individuals.

In essence, teachers play a pivotal role in nation-building, and their contribution is invaluable. A nation can only develop when its teachers are competent, and the development of a healthy and civilized society and nation is unimaginable without teachers.

Former President Dr. Sarvepalli Radhakrishnan aptly said: "God is within us, feels and suffers, and with time, their qualities, knowledge, beauty, and love will be revealed in the minds of each one of us." This highlights the transformative power of knowledge and the role of teachers in guiding us towards our true potential.

Gratitude towards Teachers

Teachers' Day is celebrated to express our gratitude towards our teachers. The purpose of this day is to thank them for providing us with better education and shaping our personalities. The contribution of teachers to nation-building is invaluable, and their efforts deserve appreciation. A nation can develop only when its teachers are qualified. While all teachers worldwide are revered, some have made significant contributions to India's development.

Notable teachers who have played a crucial role in shaping India's future include Raja Ram Mohan Roy, Swami Vivekananda, Dr. Bhim Rao Ambedkar, Maulana Abdul Kalam Azad, and APJ Abdul Kalam. These individuals have made immense contributions to the development of our nation, and their legacy continues to inspire future generations.

The celebration of Teachers' Day is a tribute to the tireless efforts of teachers who have shaped the minds of generations. It is a day to acknowledge their dedication and commitment to education and nation-building.

Conclusion

Socially, human beings are meant to live together. Society is composed of many people, including both good and bad. It is evident that good people try to make society better, while bad people contribute to the emergence of evils, frustrations, hatred, and superstitions. In this context, our teachers have made efforts to eradicate these frustrations, superstitions, ignorance, and other negative aspects through their contributions.

Even today, we find many examples of teachers in our country who make our hearts proud. Their dedication and commitment to education and nation-building are truly inspiring, and their contributions deserve our heartfelt appreciation.

Educationist
Govt. Sr. Sec. School, Rewari
Haryana

From Counting on Fingers to Clicking on AI: What Are We Losing?

Smita Agrawal

History has repeatedly shown us that every new technology disrupts the way society functions. When calculators were first introduced in classrooms, many elementary school teachers protested. Their concern was not about rejecting technology itself, but about the dangers of introducing it too early. If a child is given a calculator before they even learn to count, they may never develop the foundational numeracy skills necessary for higher understanding. The protest was not against calculators, but against their premature use.

The same debate has resurfaced today with Artificial Intelligence (AI). Just as calculators once raised fears, AI is now raising serious questions: Should we allow students unrestricted access?

Or should its usage be guided carefully?

There is no doubt that AI, like other technologies before it, is powerful and beneficial. But misuse or overuse carries dangers. If students become overly dependent on AI, their natural capacity to think critically, solve problems, and reason logically may diminish. What begins as a tool to enhance learning can easily turn into a crutch that weakens intellectual ability "from brainstorming to brain-got-stormed."

This concern is not unfounded. A lot of people lost their jobs when tractors were invented, and even more when printers transformed publishing. Yet those innovations also created new opportunities, reshaping economies and societies. "At its core, the concern about AI is not with the technology itself, for AI is not a new phenomenon. To argue that technology should be abandoned altogether is both impractical and unconvincing."

The real question is not whether to use AI, but when and how to use it.

Machines that replace human labor are one challenge; machines that replace human thinking are another altogether. If cognitive skills erode, then human capabilities lose their exclusivity. Labor can be reskilled, but the loss of critical thinking threatens the very foundation of education and progress.

As a mathematics teacher recently pointed out, over the years students who rely too much on calculators have lost basic numeracy skills. They struggle with multiplication tables, take longer to perform simple arithmetic, and often accept whatever answer the calculator provides , even when it's keyed in incorrectly. During a recent

Pre-Calculus course, limiting the use of calculators revealed how students' thinking deepened and their problem-solving improved. Tools are valuable, but only when they serve as enhancers of learning rather than replacements for it.

This is precisely where the role of educators and parents becomes crucial. Technology in education requires clear guidelines. Young children in primary classes should not be exposed to AI tools in ways that bypass foundational learning. Once the underlying concepts are mastered, AI can then be introduced as a powerful aid to explore, analyze, and create.

The question is not "AI or no AI," but "AI at the right time, in the right way." Just as we wouldn't give a six-year-old a calculator to avoid teaching them how to count, we shouldn't hand over AI tools before students have understood the concepts those tools are meant to support.

The real concern with AI is not the technology itself, after all, AI is not something entirely new. Saying that we should stop using technology altogether is neither practical nor sensible. What truly matters is how and when we let children use it, because misuse or overuse can do more harm than good. The real issue is its inappropriate and unregulated use, often fueled by hype and detached from the realities of learning. If left unchecked, this can erode critical thinking and life skills, leaving future generations dependent rather than empowered. "Let technology guide learning, not replace thinking." "Technology should support our thinking, not replace it. When used wisely, it can enrich learning; but if misused, it can weaken the true purpose of education."

PGT Biology
St. Kabir's School, Hisar
Haryana

Live

When the Universe whispers to you in kaleidoscope secrets.
Let it.
When the forest beckons to you in shades of verdant green.
Go hike there.
When the sea serenades you in harmonies of turquoise hues.
Go with the flow.
Majestic mountains, barren brown, entice with a snow white crown.
Hit the road.
When cerulean clouds wave banners of a blue pristine breeze.
Feel it.
The downpour of rainy days, petrichor, and rainbow radiance.
Breathe it.
Be one with the universe in a celestial celebration of your life.
Just live it.

Dr. Deviyani Singh
deviyanisingh@gmail.com

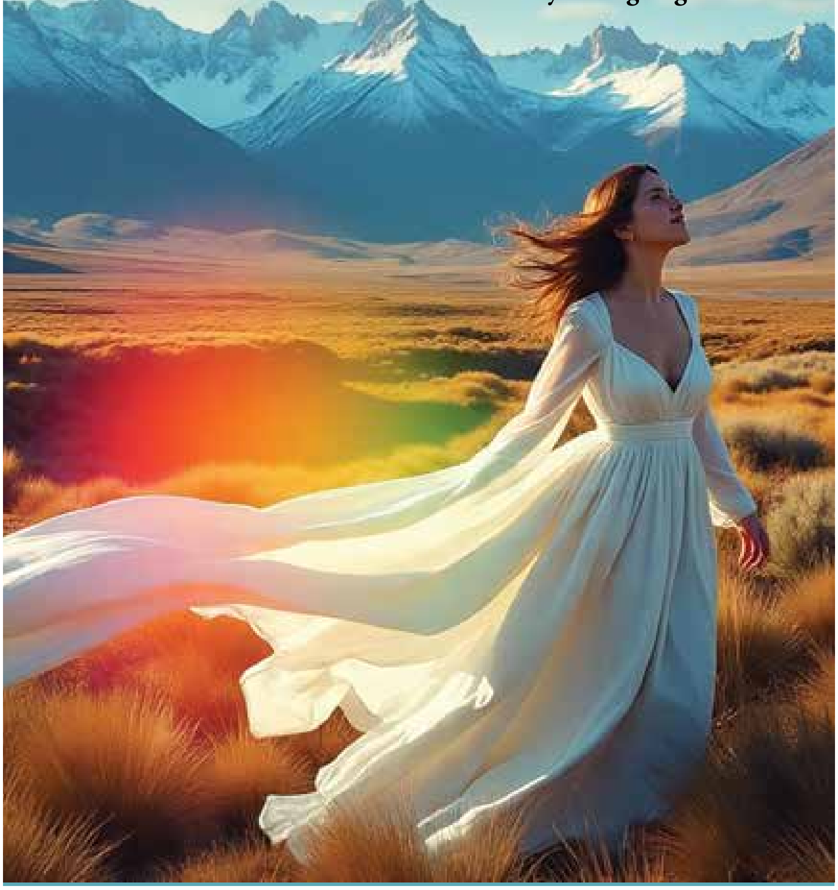

A Dance with the Clouds

Anita Thakur

I was just a little girl, no older than eight, living in a small newly built town, Chandigarh. My school was a humble primary government building, not too far from home—just enough for me to walk there and back every day. The journey wasn't long, but it was full of small adventures that always made my day feel grander than it really was.

It was one of those afternoons in late September, right at the tail end of the monsoon season. The rains had just started to loosen their grip on the land, leaving behind the lingering scent of wet earth, and the air carried the weight of change. I loved the rains. The soft drumming of water on the roof, the dark clouds hanging low in the sky like a promise, and the way the world seemed to hold its breath, waiting for the next burst of thunder.

What made it even better was the little street mates I had at Z Street!!! We were a rowdy bunch, always in sync with each other, and we had mastered a fine art—an art that many would consider trivial, but to us, it was a thing of wonder. We would grab our old, discarded notebooks, the ones with pages that had been scribbled on and forgotten, and tear them into pieces. And then, as if by magic, we would fold them into little boats. The rainwater in the streets became our ocean, and we would race our boats—ruthlessly competitive, yet filled with laughter—down the small streams that formed on the road. None of us had

ever seen a boat capsize. We were that good. It was as if the boats we made knew their purpose, as if the world around us had conspired to give us a perfect, tiny adventure.

On my way back home from school, the sky was a mixture of dramatic cotton-candy clouds and harsh, blazing sun. The weather at that time of year seemed to play games with me. There were patches of shade that would appear suddenly, as if the sky was teasing me, and then disappear just as quickly when the clouds drifted away. It was a game I never tired of. I would start running toward a patch of shade, the coolness tempting me to race, but as soon as I was nearly there, the cloud would shift, and the sun would blaze again, forcing me to chase after the next shadow.

It felt like a dance, and I, a child full of endless energy, was its eager partner. Sometimes, the shade would be just out of reach, and I'd find myself laughing—panting, but laughing—at the absurdity of it all. How could something so simple make me so happy? How could the sky—shifting, fleeting—become my playground?

There were no grown-up worries, no deadlines or responsibilities—just the simplicity of being caught between the heat of the sun and the coolness of the clouds. Sometimes, I would even forget where I was, lost in the game of chasing clouds and shadow. And in those moments, it wasn't just the weather I was playing with. It was my imagination, untethered and wild, that danced alongside me.

It's funny how a little thing like that, a game of shade and sunshine, could feel like the most important thing in the world. And perhaps, it was. Perhaps, in the innocence of childhood, that was all that mattered. To play, to laugh, to chase something as elusive as a shadow and to feel, for just a moment, that the world was yours to run after.

I don't think I ever really caught up with the shade, not once. But I didn't need to. The game, the pursuit itself, was the joy. Even now, years later, when I think of those afternoons, I can almost feel the warmth of the sun and the coolness of the shade, as if I'm still running, still chasing. It's funny how childhood has a way of wrapping itself around you, long after you've left it behind. But then again, maybe some things are meant to stay forever—like the memory of chasing clouds, of dancing with the sky, and of being just a little girl, forever running.

Freelance Poet and Writer
anitathak@gmail.com

Breaking the myths...Physical Education for Upliftment

Anil Lohan

Health and social adaptation are foundation of a happy life, luckily, both can be enhanced by regular efforts. Proper diet and regular exercise under trained guidance can do miracles for health of a person in particular and for society at large. It marks the need of physical education from childhood. Physical education is the process that converts a natural stone into a valuable marvel, it shows the path for achievement. But, unfortunately, a number of myths are associated with physical education. Firstly, the subject is ignored from its initial stage ie. at school level. It is a general perception in society that the participation of a student in sports creates hurdles for regular education. While studies establish that both physical and mental training are essential for shaping a good personality. Physical education teaches the techniques for mental concentration which improve overall studies. Secondly, playing in the street, playing in a park randomly, without any goal, is considered enough. Physical education teaches about how consistent and regular efforts make a genius player. Thirdly, selection of a game for a student is a combination of science and art. No two person are alike on the earth, therefore, strengths and weaknesses differ. Physical education helps in selecting a game according to the biology, strength and weakness of the player. Fourthly, physical education inculcates the qualities related to sports

Spirit like discipline, dedication, devotion, decorum, fraternity. Boldness, honesty, morality, consistent efforts, focus, managing emotions, maintaining overall dignity etc. Last, but not least, it is generally accepted that sports and games pertain to bodily fitness while physical education reveals how a student can eam a name, fame and employment through sports and games.

Physical education is the need of hour, any further negligence would prove a great loss for society and the nation. The attitude toward physical education in society has changed a lot, but it is still a long way to go for converting all the stones into priceless marvels. The support of the government is highly appreciated in this regard, still some remote areas remain untouched. It is the duty of all of us along with the government to place physical education at higher position for which it is eligible.

DPE
GMSSSS Sector-26
Panchkula, Haryana

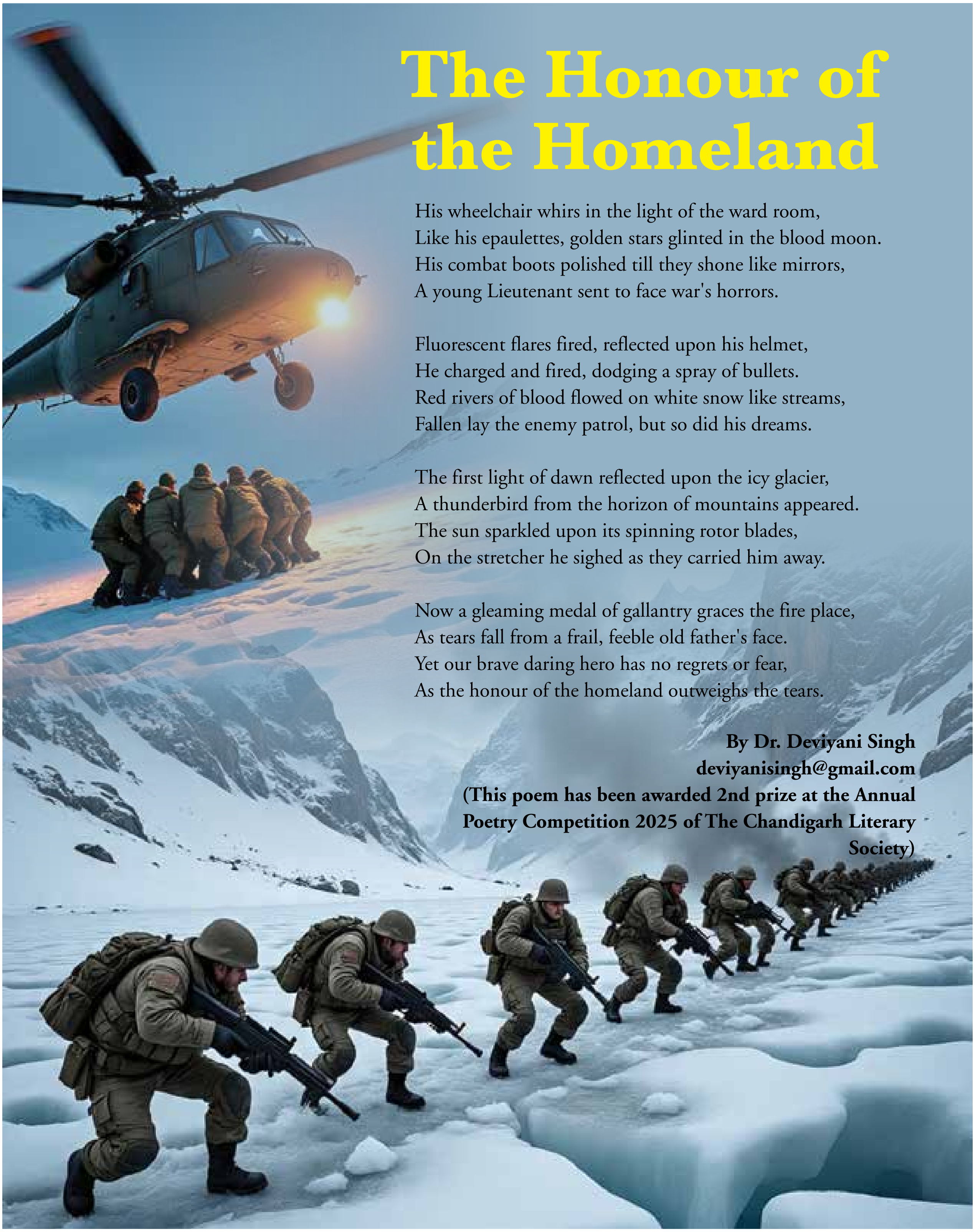

The Honour of the Homeland

His wheelchair whirs in the light of the ward room,
Like his epaulettes, golden stars glinted in the blood moon.
His combat boots polished till they shone like mirrors,
A young Lieutenant sent to face war's horrors.

Fluorescent flares fired, reflected upon his helmet,
He charged and fired, dodging a spray of bullets.
Red rivers of blood flowed on white snow like streams,
Fallen lay the enemy patrol, but so did his dreams.

The first light of dawn reflected upon the icy glacier,
A thunderbird from the horizon of mountains appeared.
The sun sparkled upon its spinning rotor blades,
On the stretcher he sighed as they carried him away.

Now a gleaming medal of gallantry graces the fire place,
As tears fall from a frail, feeble old father's face.
Yet our brave daring hero has no regrets or fear,
As the honour of the homeland outweighs the tears.

By Dr. Deviyani Singh
deviyanisingh@gmail.com
(This poem has been awarded 2nd prize at the Annual Poetry Competition 2025 of The Chandigarh Literary Society)

Be Ready for Success, but Also Be Prepared to Deal with Failure

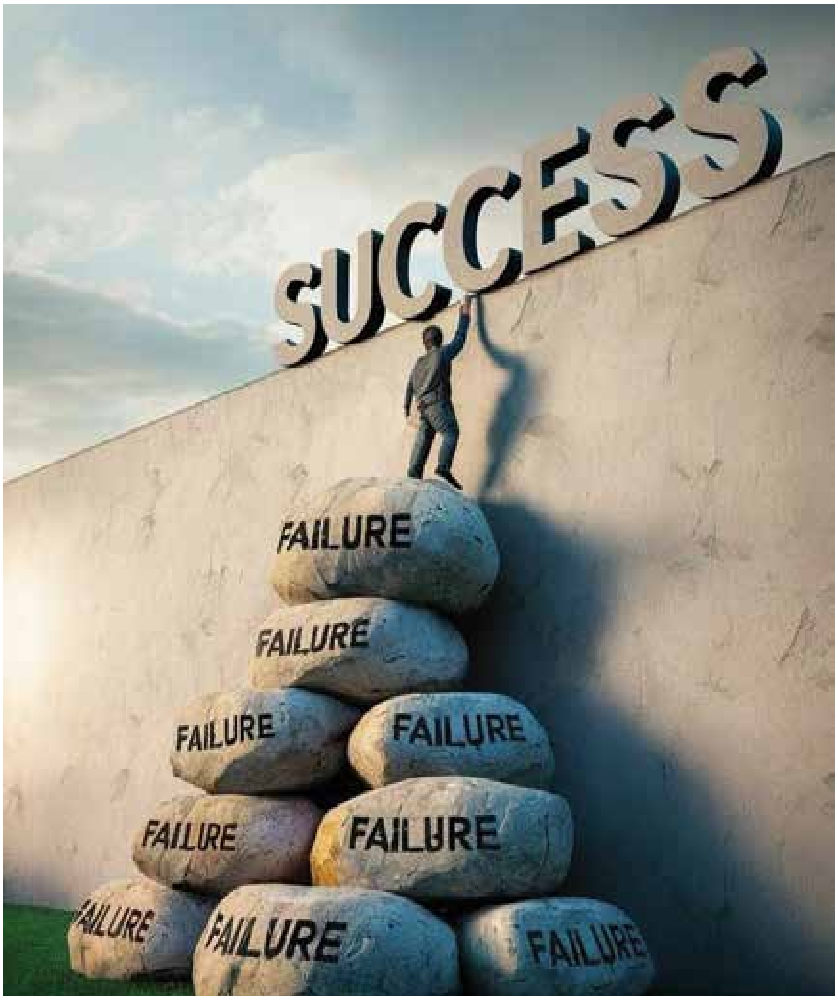

Dr. Gunjan Goel

Success is a universal goal that everyone strives for, but the journey to success is often paved with failures. Being prepared for success is crucial, but it's equally important to be prepared to deal with failure.

Preparing for Success

Preparing for success involves setting clear goals, creating a plan, and working diligently towards achieving those goals. It requires confidence, determination, and perseverance. When you're prepared for success, you're more likely to work effectively towards your goals and overcome obstacles along the way.

Preparing to Deal with Failure

Failure is an inevitable part of life, and everyone faces setbacks at some point. Being prepared to deal with failure means viewing it as a learning opportunity rather than a definitive end. When you encounter failure, you can learn from your mistakes, adjust your strategies, and move forward with renewed determination.

Examples

1. Thomas Edison: Thomas Edison's journey to inventing the light bulb is a classic example of perseverance in the face of failure. He conducted thousands of experiments, and with each failure, he learned something new that helped him refine his approach. His determination and ability to learn from failure ultimately led to his success.
2. J.K. Rowling: J.K. Rowling's "Harry Potter" series is a global phenomenon, but her first book was rejected by multiple publishers. She didn't give up, and her persistence paid off when her book became a bestseller. Rowling's story is a testament to the power of perseverance and learning from rejection.
3. Stephen King: Stephen King, one of the most prolific authors of our time, faced numerous rejections before achieving success. His first novel, "Carrie," was rejected 30 times, but he didn't let that discourage him. Today, King is

known for his horror and suspense novels that have captivated readers worldwide.

4. Walt Disney: Walt Disney was fired from his first job at a newspaper for "lacking creativity." He went on to create several businesses that failed before finding success with Disney Brothers Cartoon Studio. Disney's story is a reminder that failure is not the end, but rather a stepping stone to success.
5. Michael Jordan: - Michael Jordan, one of the greatest basketball players of all time, was cut from his high school basketballteam. He used that failure as motivation to work harder and improve his skills. Jordan's determination and perseverance ultimately led him to become a six time NBA champion.
6. Oprah Winfrey- a media mogul and philanthropist, faced numerous challenges throughout her career. She was fired from her first job as a television anchor, but didn't let that setback hold her back. Today, Winfrey is one of the most influential women in the world.

Learning from Failure

Learning from failure is essential because it provides an opportunity to understand and rectify mistakes. When you learn from failure, you can refine your strategies, improve your skills, and increase your chances of success in the future. Viewing failure as a learning opportunity makes you stronger and brings you closer to your goals.

The Importance of Resilience

Resilience is the ability to bounce back from failure and keep moving forward. It's a crucial trait for achieving success, as it allows you to learn from your mistakes and adapt to new challenges. Resilient people don't give up easily; instead, they use failure as a catalyst for growth and improvement.

Strategies for Dealing with Failure

1. Reframe Failure: View failure as a learning opportunity rather than a negative outcome. This mindset shift can help you approach challenges with a more positive attitude.
2. Analyze Mistakes: Take the time to understand what went wrong and how you can improve in the future. This analysis can help you refine your strategies and avoid similar mistakes.
3. Seek Feedback: Don't be afraid to ask for feedback from others. Constructive criticism can provide valuable insights and help you grow.
4. Stay Positive: Maintain a positive attitude, even in the face of failure. Focus on your strengths and the progress you've made, and use that momentum to propel yourself forward.

Conclusion

Being prepared for success and being prepared to deal with failure are both crucial aspects of achieving your goals. Failure is the natural part of the journey to success and learning from it can help you grow and improve. By viewing failure as a learning opportunity and staying resilient, you can overcome obstacles and achieve your goals. So, let's be ready for success, but also be prepared to deal with failure.

Educationist
Hisar, Haryana

Unscripted Brilliance: Curiosity Fueled: Unlocking Potential

‘Letting children chart their own learning journey ‘

Dr. Nirmal Gulia

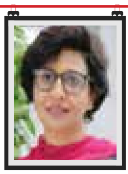

In every child lies a world of questions, wonder, and untapped brilliance. What if, instead of prescribing their path, we allowed them to chart it themselves—fuelled by curiosity and grounded in their environment? What we’d discover is an education that’s alive, joyful, and transformational—an education that doesn’t follow a script, but writes a new one every day.

Children are born learners. Long before formal schooling, they question, tinker, imitate, and imagine. They learn language not through instruction, but immersion. They master walking through experimentation, not fear of failure. This is learning in its purest form—self-directed, meaningful, and deeply embodied.

Now imagine a classroom where that spirit is not just allowed—but celebrated. A space where the teacher becomes a co-explorer, the textbook a guide—not a master—and the world outside the classroom a living curriculum. This isn’t a distant dream. It's happening. And it's powerful.

In a modest government school in Haryana, a class of Grade 6 students gave their teacher a reason to rethink everything she knew about teaching. During a science lesson on "water sources," a student raised a simple but profound question:

“Why is our village’s pond drying up faster than before?”

Instead of brushing the question aside or rushing back to the textbook, the teacher paused. She saw a spark—real curiosity. She encouraged the class to investigate. Over the next few weeks, what unfolded was a remarkable student-led inquiry.

The children interviewed elders in the village about historical water levels, measured and mapped the pond’s area using ropes and wooden sticks, recorded rainfall data and evaporation patterns with help from local officials, discovered the impact of nearby construction and deforestation.

This was no longer just a science chapter. It became an interdisciplinary learning journey—a blend of environmental science, geography, history, math, and civic awareness. The students created posters, wrote essays, and even presented solutions

to the local Panchayat, suggesting tree planting and better water use.

What began with one question led to real-world learning, real-world impact, and a classroom full of empowered learners who knew their voices mattered.

Take the example of a school in Kerala, where a teacher noticed a student's fascination with local fishing practices. Rather than brushing it aside in favour of textbook science, he encouraged the student to interview fishermen, observe fishing techniques, and document the types of fish caught during different seasons. This led to class discussions on ecosystems, marine biology, economics, and sustainability. The teacher admitted that he didn't know everything about the subject, but by becoming a co-learner, he modeled humility and lifelong learning for his students.

This openness to learn with the child, rather than always being the expert, allows for richer, more engaging classroom interactions. It also creates psychological safety—an environment where students are unafraid to make mistakes, ask questions, and take intellectual risks.

Children learn best when education is contextualized to their environment. Whether in urban or rural settings, every child is embedded in a rich socio-cultural and ecological tapestry that can serve as a dynamic learning laboratory. A street in a city can offer lessons in physics (traffic flow, sound), social studies (urban planning, migration), and economics (informal markets). What if education embraced this living, breathing world as the richest curriculum of all?

'The World as a Curriculum'

When children explore their surroundings, they engage not just with facts, but with values—empathy, responsibility, sustainability.

In both stories, unscripted learning didn't mean unstructured learning. It meant structure emerged from experience. Purpose emerged from context. And joy—unmistakable joy—returned to the classroom.

'Real Learning is Interconnected'

Teacher: A Learning Catalyst

In this transformed classroom, the teacher is not a gatekeeper of knowledge, but a guide, a listener, a learner. This shift requires courage. It means admitting, "I don't know—let's find out together." It means holding space for silence, wonder, and even chaos. It means seeing every child not just as a student—but as a thinker, a leader, a storyteller in the making.

Subject boundaries are necessary for structure—but they should never become walls. When we let children connect the dots, they begin to see learning not as memorization, but

meaning-making. They become thinkers, not just doers.

This is not just a shift in pedagogy. It's a revolution of belief—a belief that children are capable, curious, and creative by nature. That learning is not something we do to them, but something we do with them. That brilliance doesn't always arrive with perfect grammar or neat handwriting—but often in the form of a messy drawing, a profound question, or a handmade machine from discarded parts.

Making it Possible: A Pragmatic Path Forward

Can this vision scale? Absolutely. But it requires both conviction and strategy. Some grounded steps might be:

Start with one question: Begin each week or lesson with a child's question. Let it guide the learning path.

Use the local as a launchpad: Encourage students to explore what's around them—local practices, natural resources, community stories.

Train teachers as facilitators: Offer professional development in inquiry-based, experiential, and reflective teaching methods.

Build assessment around growth, not grades: Use portfolios, student-led conferences, and real-world projects to evaluate learning.

Involve families and communities: Tap into the wisdom of elders, artisans, farmers, and professionals to enrich learning.

A Future that's a canvas waiting to be painted with vibrant colors of its own

Imagine thousands of children across India—rural and urban—waking up excited to go to school. Not to pass exams, but to explore ideas, ask questions, create solutions, and express themselves. Imagine teachers feeling inspired, not burdened. Imagine classrooms buzzing with life, relevance, and possibility.

This is not a utopia. It's already happening—in various states, in the hills, in cities, in pockets of innovation across the country. **What we need now is courage—to let go of outdated structures, to trust our children, and to lead with love, curiosity, and conviction.**

Because when we let children lead their learning, we don't just unlock their potential—we ignite a revolution.

- A revolution powered not by marks, but by meaning.
- Not by control, but by creativity.
- Not by fear, but by freedom of their vision.

Let us honor every child's right to wonder, to explore, and to shine—brilliantly, unscripted.

'Revolution Rooted in Patient Listening, Love and Connectivity'

The future doesn't belong to those who memorize the most facts. It belongs to those who can ask the right questions, see connections, and navigate complexity with empathy and courage. These are the learners we need. And these are the learners we can nurture—if only we step back, trust the child, and say: "Lead the way."

Lecturer in English
DIET Machhrauli
Jhajjar, Haryana

International Literacy Day: Significance, History, and the Road Ahead

Introduction

International Literacy Day, observed annually on September 8, is a global event dedicated to highlighting the importance of literacy as a human right, a foundation for lifelong learning, and a driver of sustainable development. Initiated by UNESCO (United Nations Educational, Scientific and Cultural Organization) in 1966 and first celebrated in 1967, the day draws attention to the reality that millions of people around the world still lack basic reading and writing skills — even in the 21st century.

In 2025, International Literacy Day comes with renewed urgency. While advances in technology, education policy, and outreach programs have helped improve literacy rates globally, there remains a stark digital and educational divide, especially in marginalized communities. The theme for 2025, revolves around "Literacy for Resilience and Digital Inclusion", reflecting the changing dynamics of education in a post-pandemic and increasingly digital world.

Why Literacy Matters

Literacy is more than the ability to read and write. It is a gateway skill — one that enables individuals to access knowledge, express themselves clearly, participate in society, and break the cycle of poverty.

The significance of literacy extends into several critical areas:

- **Economic Empowerment:** Literacy opens doors to employment, entrepreneurship, and economic participation. Illiteracy often leads to low-income jobs, limited upward mobility, and economic vulnerability.
- **Gender Equality:** Girls and women who receive basic education are more likely to be employed, marry later, have fewer children, and ensure their children are educated.
- **Health and Well-being:** Literate individuals are better able to understand health information, access medical services, and engage in preventive care.

- **Democracy and Civic Participation:** Literacy fosters informed citizens who can vote, understand their rights, and engage with governance.

In short, literacy is the foundation of personal dignity and societal progress.

Global Literacy Statistics: A Mixed Picture

Despite decades of progress, the literacy challenge is far from resolved. According to UNESCO's Global Monitoring Reports:

- As of 2024, an estimated 763 million adults worldwide (two-thirds of whom are women) still lack basic literacy skills.
- Over 250 million children and adolescents do not acquire functional literacy and numeracy skills, even after several years in school.
- Sub-Saharan Africa and South Asia host the highest number of non-literate populations.
- The COVID-19 pandemic disrupted education for nearly 1.6 billion learners, exacerbating existing inequalities and halting gains made in literacy efforts.

In India, for example, the national literacy rate stands at around 77.7% (as per the 2022 National Statistical Office data), but rural and marginalized populations, especially women and tribal communities, lag significantly behind.

History of International Literacy Day

The origins of International Literacy Day can be traced to the World Conference of Ministers of Education on the Eradication of Illiteracy, held in Tehran, Iran, in 1965. Following recommendations from this conference, UNESCO established September 8 as a day to advocate for literacy as a vehicle for human progress.

Over the years, this observance has evolved to focus on:

- Adult literacy
- Digital literacy
- Literacy in conflict zones
- Inclusive literacy for people with disabilities
- Literacy in the context of multilingual societies

Each year, UNESCO selects a theme to reflect current challenges and priorities. Past themes have included "Literacy and Sustainable Development," "Literacy in a Digital World," and "Transforming Literacy Learning Spaces."

Celebrations and Activities around the World

Countries across the globe mark International Literacy Day through a variety of events and campaigns. These include:

- Workshops and Seminars: Government bodies, NGOs, and educational institutions organize events to discuss challenges and policy solutions.
- Book Fairs and Reading Drives: Schools, libraries, and publishers promote book access and reading culture.
- Award Ceremonies: UNESCO's International Literacy Prizes honor individuals and organizations making outstanding contributions to literacy efforts.
- Social Media Campaigns: Hashtags like #LiteracyDay, #ReadToLead, and #EducationForAll trend across platforms, spreading awareness globally.
- Outreach Programs: Volunteers and educators often conduct reading sessions, distribute learning materials, and run mobile libraries in underserved areas.

The Role of Digital Literacy in 2025

In recent years, especially after the COVID-19 pandemic, the definition of literacy has expanded. Digital literacy — the ability to use digital tools safely, critically, and effectively — is now considered essential.

UNESCO and educational institutions now emphasize that literacy in 2025 and beyond must include:

- Navigating online content
- Distinguishing credible from fake information
- Using online platforms for learning

and work
- Cyber safety and digital ethics

With the rise of AI, e-governance, remote work, and virtual classrooms, individuals without digital skills are increasingly marginalized. Thus, bridging the digital divide has become a central goal of modern literacy efforts.

Barriers to Literacy

Understanding the obstacles to achieving universal literacy is key to solving the problem. Some of the most common barriers include:

1. Poverty and Economic Disadvantage

Families living in poverty often cannot afford school fees, books, or the opportunity cost of children missing work to attend school.

2. Gender Discrimination

In many cultures, girls are still discouraged or even prohibited from receiving an education, especially beyond the primary level.

3. Conflict and Displacement

War, political instability, and refugee crises disrupt education for millions of children and adults.

4. Inadequate Infrastructure

Lack of schools, trained teachers, libraries, and electricity in rural areas continues to limit access to education.

5. Learning Disabilities and Lack of Inclusion

Students with learning disabilities are often overlooked due to a lack of inclusive teaching methods and resources.

How Governments and NGOs Are Making a Difference

Several initiatives have made meaningful progress in the fight against illiteracy:

- India's "Padhna Likhna Abhiyan": Aimed at achieving 100% adult literacy with a focus on women and marginalized groups.
- UNESCO's Global Education Coalition: A platform launched during COVID-19 to provide remote learning solutions.
- Room to Read: An international NGO that builds libraries and publishes children's books in local languages across Asia and Africa.
- Pratham's ASER (Annual Status of Education Report): A critical citizen-led initiative that evaluates the learning outcomes of children in rural India.
- Digital Learning Tools: Platforms like Khan Academy, Byju's, and Coursera are democratizing education access.

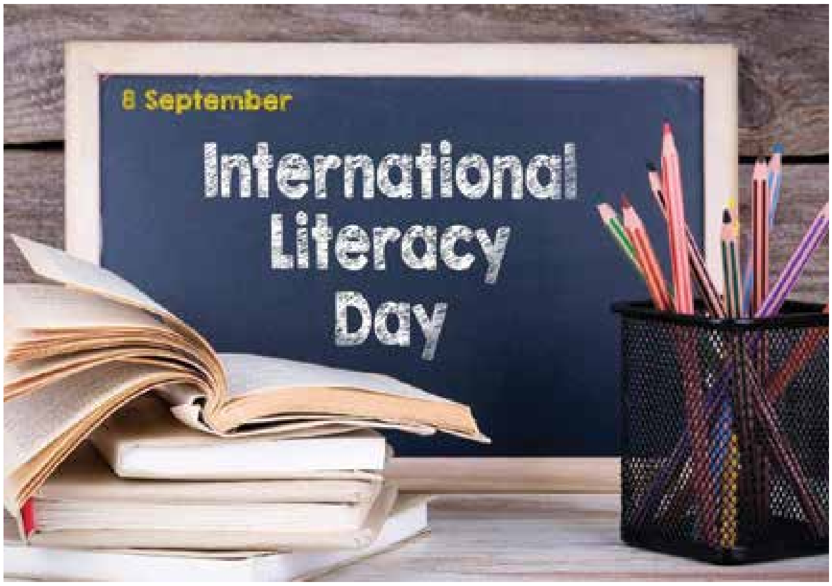

What You Can Do

You don't need to be a policymaker or teacher to promote literacy. Here's how individuals can contribute:

- Donate books to schools, prisons, or libraries in underserved areas.
- Volunteer as a tutor in your community or online.
- Support education-focused NGOs financially or through skill-based volunteering.
- Encourage reading habits in your family, especially among children.
- Promote mother tongue literacy, which helps in both emotional and educational development.

The Future of Literacy

As we move further into the 21st century, literacy is no longer a static skill — it's an evolving competency. The future of literacy will be:

- Multilingual: Embracing diverse languages and cultures.
- Digital-first: Empowering individuals to thrive in a tech-driven world.
- Lifelong: Not just for children, but for adults, seniors, and learners of all ages.
- Inclusive: Tailored for learners with disabilities, migrants, and remote communities.
- Sustainable: Integrated into broader goals like climate action, social justice, and economic equity.

Conclusion

International Literacy Day, observed on September 8, is not just a symbolic celebration — it's a call to action. As global citizens, we are all stakeholders in the mission to ensure literacy for every person, everywhere. Whether through policy, innovation, teaching, or grassroots involvement, the fight against illiteracy is far from over — but it is winnable.

Let us remember: A literate world is an empowered world.

Durga Puja and Navratri: A Celebration of Faith, Culture, and Community

India is a land of festivals, each carrying its own story, color, and spirit. Among the most vibrant and widely celebrated are Durga Puja and Navratri, two festivals that honor the Goddess Durga in her various forms. Though they share a common spiritual core—the triumph of good over evil—they are observed in different ways across the country. Together, they represent a blend of mythology, devotion, art, music, and community, making them not just religious occasions but also cultural phenomena.

Mythological Origins

The origins of Durga Puja and Navratri are deeply rooted in Hindu mythology. According to the Devi Mahatmya from the Markandeya Purana, Goddess Durga was created by the combined powers of Brahma, Vishnu, and Shiva to defeat the buffalo demon Mahishasura, who could not be slain by any man or god. Durga, embodying Shakti (divine feminine energy), fought Mahishasura for nine nights and ten days, finally slaying him on the tenth day.

Navratri, which literally means "nine nights," commemorates this battle, with each day dedicated to one of Durga's nine manifestations—Shailaputri, Brahmacharini, Chandraghanta, Kushmanda, Skandamata, Katyayani, Kalaratri, Mahagauri, and Siddhidatri. Durga Puja, particularly celebrated in Bengal and eastern India, focuses on the last five days of this epic struggle, culminating in Vijaya Dashami, when the goddess is victorious and returns to her celestial abode.

Durga Puja: The Bengali Extravaganza

In West Bengal, Assam, Tripura, and Odisha, Durga Puja is more than a religious festival—it is the lifeblood of community, art, and tradition. The preparation begins months in advance with artisans in Kumartuli (Kolkata's potters' quarter) carefully sculpting clay idols of the goddess and her four children—Lakshmi, Saraswati, Kartikeya, and Ganesha.

The five-day festival (Shashthi to Dashami) transforms cities into open-air art galleries. Gigantic pandals (temporary pavilions) are erected, often with elaborate themes ranging from replicas of famous monuments to imaginative contemporary designs. Inside, the idols of Durga slaying Mahishasura are installed, glowing with grandeur and devotion.

The days are filled with rituals—pushpanjali (flower offerings), aarti, and the rhythmic beating of dhaak drums. Evenings come alive with cultural programs, dance, and theatre. Food, too, becomes a central part of the celebration. Community feasts or bhogs of khichuri, labra, chutney, and payesh are distributed, while the streets bustle with stalls selling sweets, rolls, and Bengali delicacies.

On the final day, Vijaya Dashami, married women smear vermilion on Durga's idol and each other in the ritual of Sindoor Khela, symbolizing the goddess's marital bliss and power. The idols are then immersed in rivers or lakes amid processions of chanting, music, and emotion. The immersion, called Visarjan, represents the cycle of creation and dissolution in the universe.

Navratri: A Pan-Indian Celebration

While Durga Puja thrives in the east, Navratri is celebrated across India with diverse traditions. In Gujarat and Maharashtra, it is synonymous with vibrant garba and dandiyaraas dances, where people in colorful attire circle around lamps or images of the goddess, singing folk songs late into the night. The rhythmic clapping, swirling skirts,

and beating sticks create an atmosphere of joyous devotion.

In northern states like Uttar Pradesh, Himachal Pradesh, and Delhi, Navratri is marked by Ramlila performances—dramatic re-enactments of the Ramayana. The festivities culminate on Dussehra, when effigies of Ravana, Meghnath, and Kumbhkaran are burnt, symbolizing Lord Rama's victory over evil.

In southern India, particularly Tamil Nadu, Karnataka, and Andhra Pradesh, the festival is celebrated with Golu—artistic displays of dolls and figurines arranged on steps, representing gods, saints, animals, and mythological scenes. Families invite neighbors to view their golu, sing devotional songs, and exchange gifts. In Kerala, the last three days of Navratri are dedicated to Saraswati, the goddess of wisdom, when books and musical instruments are worshipped.

Each region, while maintaining its own flavor, shares the same essence: devotion to the divine feminine and the affirmation of good triumphing over evil.

Symbolism and Spirituality

Durga Puja and Navratri are not just cultural festivals—they carry deep symbolic meaning. Durga's victory over Mahishasura represents the triumph of righteousness, truth, and divine strength over arrogance and ignorance. Her many arms, each carrying a weapon, signify that she protects her devotees from all directions.

The nine forms of the goddess during Navratri symbolize different virtues: courage, discipline, creativity, motherhood, destruction of negativity, and spiritual enlightenment. Devotees fast, meditate, and recite scriptures, cleansing their body and mind. The fasting is not just about abstaining from food but about purifying thought and action.

The festivals also highlight the importance of Shakti, the feminine energy that sustains the universe. By worshipping Durga, devotees acknowledge that the divine mother is the source of creation, preservation, and destruction, embodying the cyclical nature of existence.

Cultural and Social Dimensions

Beyond spirituality, Durga Puja and Navratri foster social unity. Families reunite, communities collaborate in organizing events, and people from different walks of life come together to celebrate. Pandals in Kolkata often compete for artistic excellence, becoming platforms for creativity and innovation. Similarly, garba grounds in Gujarat attract thousands, creating an atmosphere of collective joy.

The festivals also boost local economies. Artisans, craftsmen, decorators, musicians, and food vendors find livelihood opportunities during this time. In many places, it is the busiest and most prosperous season of the year.

Moreover, these festivals are inclusive. Even though rooted in Hindu tradition, people of other faiths often join the celebrations. In cosmopolitan cities, corporate offices, schools, and cultural organizations also arrange Navratri and Puja festivities, turning them into secular events of shared joy.

Modern Adaptations

In today's age, Durga Puja and Navratri have adapted to changing times. Eco-friendly idols made of clay and natural colors are encouraged to reduce water pollution from immersion rituals. Many organizers adopt themes that highlight social issues such as women's empowerment, environmental conservation, or education. Technology, too, plays a role—virtual darshans and live-streamed pujas connect devotees across the globe.

At the same time, the essence remains unchanged: a celebration of faith, community, and the eternal message that good always triumphs over evil.

Conclusion

Durga Puja and Navratri are not merely festivals; they are experiences that touch every aspect of life—mythology, devotion, art, community, and culture. They remind us of the power of the divine feminine, the importance of moral courage, and the joy of togetherness. Whether it is the grandeur of Kolkata's pandals, the vibrancy of Gujarat's garba nights, or the serenity of southern golu displays, each region contributes a unique shade to this nationwide canvas of devotion.

Ultimately, the festivals affirm a timeless truth: in the endless battle between light and darkness, light always prevails. And in celebrating Durga and her many forms, people celebrate not only the goddess but also the resilience, creativity, and spirit of humanity itself.

आदरणीय सम्पादक महोदय,

सादर नमस्कार।

'शिक्षा सारथी' के अगस्त माह को पढ़ना न केवल सुखद बल्कि ज्ञानवर्धक अनुभव रहा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति से सम्बन्धित सभी लेख शैक्षिक परिवर्तन की झलकियाँ प्रस्तुत करते प्रतीत हुए। इस बात से मैं पूर्णतः सहमत हूँ कि शिक्षा केवल परीक्षा पास करने का माध्यम नहीं, बल्कि जीवन जीने की दिशा और दृष्टि है।

संदीप कुमार द्वारा लिखित 'सतपुड़ा के जंगलों ने सुनाया जीवन का राग' में यह समझ आता है कि साहसिक एवं प्रकृति अध्ययन शिविरों का उद्देश्य छात्रों और शिक्षकों को केवल शैक्षणिक ही नहीं, बल्कि जीवनोपयोगी और अनुभवजन्य शिक्षा से जोड़ना भी है। ट्रेकिंग, साहसिक खेल और सांस्कृतिक गतिविधियाँ केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि आत्मविश्वास, नेतृत्व और टीमवर्क का अभ्यास भी कराती हैं।

दर्शन लाल बवेजा ने अपने लेख 'खेल-खेल में विज्ञान' के अंतर्गत कुछ रुचिकर विज्ञान गतिविधियाँ प्रस्तुत कीं, तो डॉ. मोनिका शर्मा ने नमक में छिपे अनेक वैज्ञानिक रहस्यों से अवगत कराया। यह कहना गलत नहीं होगा कि यदि विज्ञान को नवीन प्रथाओं को शामिल करते हुए अनुभवात्मक शिक्षण दृष्टिकोण का उपयोग करके सिखाया जाए, तो इसे गहरी समझ के साथ दिन-प्रतिदिन के जीवन में सीखा और लागू किया जा सकता है। श्री नरसिंह चाहर द्वारा बहुभाषावाद पर लिखा गया लेख भारत के लिए बहुभाषावाद और अवसरों के भविष्य को आकार देने वाले रुझानों पर केंद्रित है।

'शिक्षा सारथी' के इस संस्करण में प्रत्येक लेख ज्ञान-भंडार को बढ़ाता है और सराहनीय है। संपादक मंडल को साधुवाद।

डॉ. सारिका धूपड़
पीजीटी, जीवविज्ञान
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, सेक्टर-19, पंचकूला

आदरणीय सम्पादक महोदय,

सादर नमस्कार।

मैं 'शिक्षा सारथी' पत्रिका का नियमित पाठक हूँ। हाल ही में मुझे पत्रिका का अगस्त अंक प्राप्त हुआ। इस अंक में विविध विषयों पर रोचक व ज्ञानवर्धक लेख प्रस्तुत किए गए हैं, जिनके लिए मैं सम्पादक जी को हार्दिक बधाई देना चाहता हूँ। विशेष रूप से, अखिल भारतीय शिक्षा समागम -2025, हरियाणा में डिजिटल शिक्षा का नया युग, और सतपुड़ा के जंगलों ने सुनाया जीवन का राग जैसे लेख बहुत प्रेरणादायक लगे।

पत्रिका के सभी स्थायी स्तंभ बहुत ज्ञानवर्धक हैं। 'खेल-खेल में विज्ञान' के अन्तर्गत जिन गतिविधियों की जानकारी दी जाती है, उन्हें हर विद्यालय में आसानी से कराया जा सकता है, क्योंकि उनमें इस्तेमाल की जानी वाली सामग्री हर स्थान पर आसानी से उपलब्ध होती है। 'बाल सारथी' में दी जाने वाली जानकारियाँ काफी रोचक होती हैं। विभिन्न विषयों का संतुलित समावेश, जो हिंदी एवं अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं में प्रस्तुत किया गया है, इसे अत्यंत उपयोगी बनाता है।

आपके प्रयास से यह पत्रिका शिक्षकों, विद्यार्थियों व समाज के लिए मार्गदर्शक बनती जा रही है। मैं आशा करता हूँ कि आप इसी प्रकार प्रेरणादायक लेख प्रकाशित करते रहेंगे। आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

सादर।

मनीष कुमार
सहायक, लेखा शाखा
निदेशालय माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

हिन्दी

हमारे तन, मन और आत्मा की भाषा हिंदी है,
जिसके माथे पर सजी सिंदूरी बिंदी है।
इससे बनी हमारी विविधताओं में एकता,
हर मन में रची-बसी जैसे रच जाती मेहँदी है।
हमारे तन, मन और आत्मा की भाषा हिंदी है।

बेशक हमारी सबकी अपनी-अपनी बोली है,
संस्कृति के लिहाज़ से हम सब हमजोली हैं।
पर्वत, पहाड़, नदियाँ, झरने पहचान हमारी,
वेशभूषा और बोलियाँ इस भारत की रंगोली हैं।
राजभाषा का तमगा पहने इसकी अपनी बुलंदी है,
हमारे तन, मन और आत्मा की भाषा हिंदी है।

सपने देखे हिन्दी में और हिन्दी कविताएँ लिखीं,
कहानियाँ, उपन्यास और ललित कलाएँ लिखीं।
बड़े-बड़े ग्रंथों की रचना कर हिंदी को समृद्ध किया,
आज़ादी पर मर मिटने वाले वीरों की गाथाएँ लिखीं।
पूरे करो अपने सपनों को, यहाँ नहीं कोई पाबंदी है,
हमारे तन, मन और आत्मा की भाषा हिंदी है।

विश्व स्तर पर भी हिंदी का अपना एक संसार है,
मातृभाषा की भाँति इसे मिला सभी का प्यार है।
विश्व प्रेम का संदेश लेकर जाती है विदेशों में भी,
सभी भाषाओं का बना ये अनोखा परिवार है।
भारत के सिर का ताज बनी ये अपनी सरहिंदी है,
हमारे तन, मन और आत्मा की भाषा हिंदी है।

हिन्दी अपनी मातृभाषा है, ये हमेशा आबाद रहे,
अपने रगों में बहती है ये, ये भी हमको याद रहे।
इस भाषा ने विश्व को जोड़ा, जोड़ा ये संसार है,
इसके आँगन में हम सबके सपने आज़ाद रहें।
सजदा करते हम सभी, ये राष्ट्र के माथे की बिंदी है,
हमारे तन, मन और आत्मा की भाषा हिंदी है।

लव कुमार
पीजीटी हिन्दी
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, भूरेवाला
नारायणगढ़, अंबाला, हरियाणा

RNI NO: HARBIL/2012/52385 POSTAL REGD NO: HR/AB-102/23-25

कलम, आज उनकी जय बोल

जला अस्थियाँ बारी-बारी,
चटकाई जिनमें चिंगारी,
जो चढ़ गए पुण्यवेदी पर,
लिए बिना गर्दन का मोल।
कलम, आज उनकी जय बोल।

जो अगणित लघु दीप हमारे,
तूफानों में एक किनारे,
जल-जलाकर बुझ गए किसी दिन,
माँगा नहीं स्नेह मुँह खोल।
कलम, आज उनकी जय बोल।

पीकर जिनकी लाल शिखाएँ,
उगल रही सौ लपट दिशाएँ,
जिनके सिंहनाद से सहमी,
धरती रही अभी तक डोल।
कलम, आज उनकी जय बोल।

अंधा चकाचौंध का मारा,
क्या जाने इतिहास बेचारा,
साखी हैं उनकी महिमा के,
सूर्य, चन्द्र, भूगोल, खगोल।
कलम, आज उनकी जय बोल।

-रामधारी सिंह 'दिनकर'

If undelivered Please return to c/o Shiksha Saarthi Branch, 3rd Floor, Shiksha Sadan, Sector-5, Panchkula(HR)-134114